चन्दामामा
जून १९७०
75 P

चन्दामामा

जून १९७०

Chandamama - H I N D I
Chandamama - T E L U G U
Chandamama - KANNADA
Chandamama - GUJARATI
Chandoba - MARATHI
Ambulimama - T A M I L

GRAMS: "CHANDAMAMA"

PHONE: 444851 - 6 LINES

ESTD. 1947

CHANDAMAMA PUBLICATIONS

2 & 3, ARCOT ROAD :: VADAPALANI :: MADRAS - 26

संपादक की ओर से!

अनेक वर्षों से आप लोग बराबर हमें लिखते आ रहे हैं कि चन्दामामा अंग्रेजी भाषा में क्यों नहीं प्रकाशित करते? अब हमने अंग्रेजी में भी 'चन्दामामा' प्रकाशित करने का निश्चय किया है। जुलाई पहली तारीख तक 'अंग्रेजी चन्दामामा' बुक स्टालों में प्राप्त होगी। इसमें ऐसी अनेक कहानियाँ होंगी जिन्हें आप लोगों ने अब तक पढ़ी न होंगी। भारत की पौराणिक कहानियाँ ही नहीं बल्कि रूस की एक कहानी, सिसिली की एक कहानी को भी आप इसमें पढ़ सकेंगे। ७५ पैसों में अपूर्व विनोद एवं ज्ञानवर्द्धन करानेवाली पत्रिका है। एक प्रति खरीद कर देखिये। आप हमेशा इसे पढ़ने की प्रेरणा पायेंगे!

संपादक

आनंद
अपना वजीफा
खोते-खोते बचा!

परीक्षा के दिन ...
आनंद, प्रश्नों के ठीक से लिखना। याद रखना कि तुम्हें अपना वजीफा कायम रखना है।

परीक्षा हाल में...
अहा हा! पर्चा कितना आसान है।

एक घंटे बाद ...
समझ में नहीं आता कि मेरी पेन बंद क्यों पड़ गयी।

मैं समय पर अपना पर्चा कैसे पूरा कर सकता हूँ?

फिक्र मत करो आनंद, यह लो कैम्लिन पेन और कैमल इंक और लिखना शुरू करो।

ओह! यह स्याही कितनी अच्छी है। यह चटकीली भी दिखती है। अब मैं समय पर पर्चा पूरा कर लूंगा।

आनंद ने समय पर पर्चा पूरा कर लिया।

जिस दिन परिणाम निकला...
बधाई!
तुमने कमाल कर दिया
बधाई!

याद रखिये, कैमल इंक और कैम्लिन पेन सरलता से चलती हैं। हमेशा कैमल ही लीजिये।
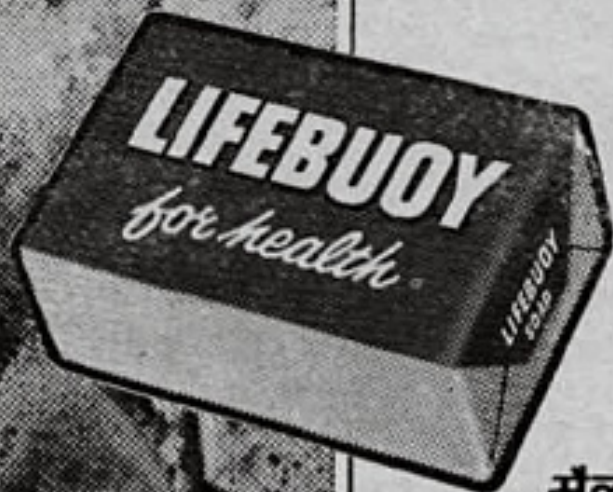
लाइफ़बॉय
हैं जहाँ
तंदुरुस्ती
हैं वहाँ
LIFEBUOY
for health
LIFEBUOY SOAP
लाइफ़बॉय
मैल मे छिपे कीटाणुओं
को धो डालता है
लिंटास- L.62-77 HI
हिन्दुस्थान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन
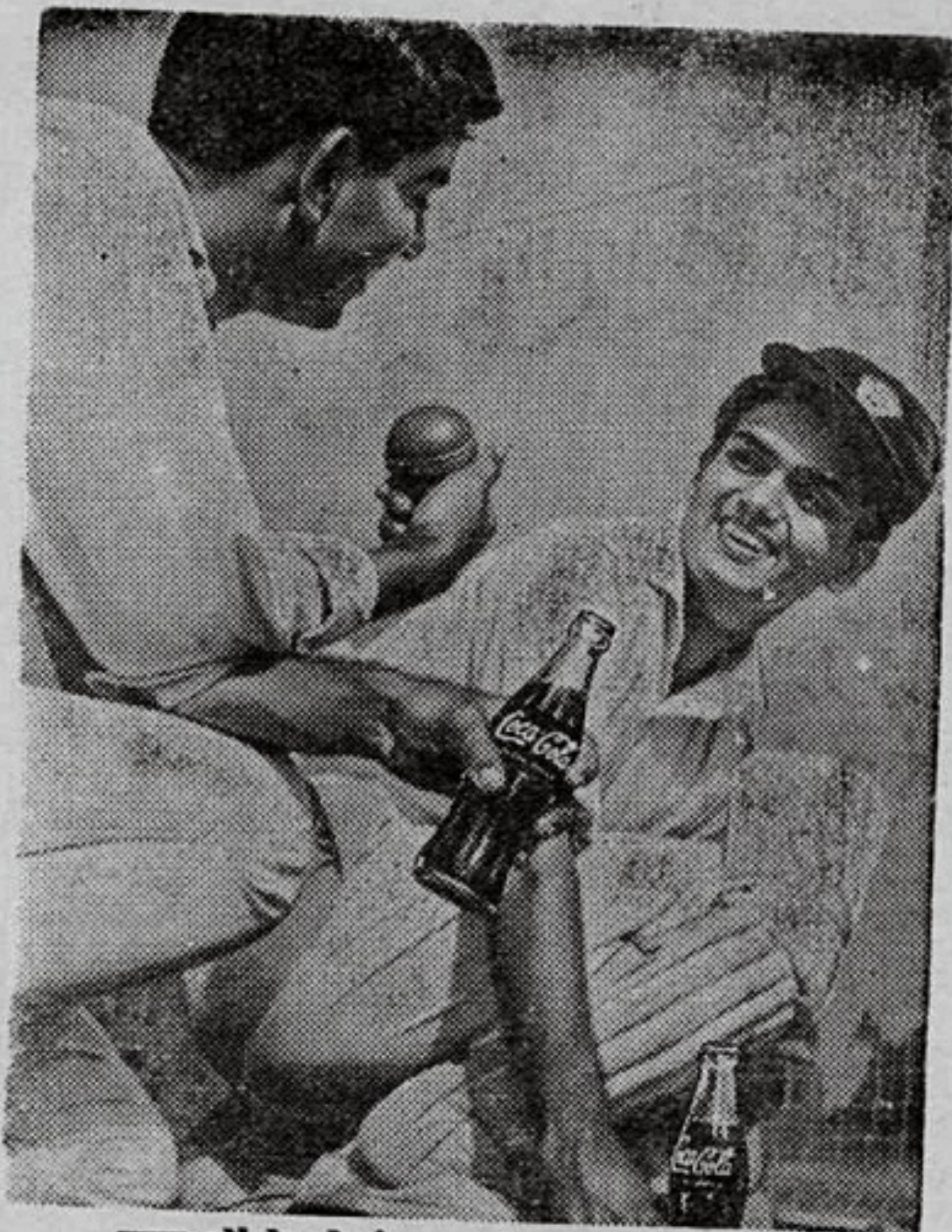
चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

इस अंक के साथ सिंदबाद की अद्‌भुत यात्राएँ समाप्त हो रही हैं। इस अंक की एक और विशेषता है कि इसमें 'आदमी और घोड़ा', 'वरदान' 'मामूली सवाल' आदि चार हास्य रस की कहानियाँ भी दे रहे हैं।

'डाकू' नामक कहानी में चोरों के अमल करने की एक नयी नीति है। डाकू व उसका शिष्य चोरी तो करते हैं, पर वे यह सहन नहीं कर पाते कि बेचारे निरपराधी उनकी वजह से दण्ड पावे।

वर्ष: २१ जून १९७० अंक: १०

आदमी और घोड़ा

एक गाँव में शिव नामक एक गरीब लड़का था। वह हमेशा खुश रहता था। हँसते-हँसाते अपने दिन बिता देता था। कभी मेहनत न करता, इसलिए वह सदा गरीब ही बना रहा। फिर भी वह इसकी बिलकुल चिंता नहीं करता था।

उसी गाँव में एक ज़मीन्दार था। शिव के हाथ जब एक कौड़ी भी न होता तब वह ज़मीन्दार के यहाँ जाता, काम मांग लेता, वे जो भी काम देते, उसे मन लगाकर करता।

एक दिन उसे ज़मीन्दार के घोड़े की मालिश करने का काम सौंपा गया। शिव घोड़े की मालिश करते ज़ोर से चिल्ला पड़ा–"वाह, देखो तो, यह घोड़ा खूब दाना खाकर कैसा मोटा-तगड़ा बन बैठा है। इसकी क़िस्मत को क्या कहे? अगर मैं भी ज़मीन्दार का घोड़ा होता, तो क्या ही अच्छा होता! मुझे पेट भर खाना मिलता, नौकर-चाकर मेरी सेवा करते।"

शायद यह सोचते-सोचते शिव को हँसी आ गयी कि वह घोड़ा का जन्म लेने की क्यों सोचता है! उसकी हँसी सुनकर घोड़े ने घास चरना छोड़ दिया और शिव से पूछा–"क्या तुम सचमुच घोड़ा बनना चाहते हो?"

घोड़े को बोलते देख शिव घबरा गया। हँसना छोड़ आश्चर्य के साथ वह घोड़े को देखने लगा। घोड़े ने फिर कहा–"तुम क्या जानो, ज़मीन्दार की सवारी कैसी भयंकर है? वह कोड़े से कैसे मारता है? यदि तुम इसका पता लगाना चाहते हो तो मेरे दोनों कान पकड़कर मन में यह कामना करो कि तुम मेरा अवतार लेना चाहते हो! बस, तुम भी चन्द मिनिटों में

सतीशचन्द्र

घोड़ा बन जाओगे। चाहे तो परीक्षा करके देखो तो सही!"

शिव तुरंत घोड़े के पास गया। उसके दोनों कान पकड़कर बोला—"मैं ज़मीन्दार का घोड़ा बन जाऊँ!"

दूसरे ही क्षण शिव को मालूम हो गया कि वह घोड़ा बन गया है। घोड़े की जगह एक बैरागी खड़ा था।

"ऐ बैरागी! मुझे दाना ले आओ।" शिव ने कहा।

लेकिन बैरागी ने घोड़े की बात पर ज़रा भी ध्यान न दिया, वह तेज़ी से बाहर चला गया।

शिव को अब मालूम हुआ कि उसने बड़ी गलती की है। उसकी समझ में न आया कि वह घोड़े के अवतार से फिर मनुष्य कैसे बन सकता है? उसने निश्चय किया कि ऐसा मौक़ा मिलते ही घर भागना चाहिए। उसे जहाँ एक ओर घोड़ा बन जाने की खुशी हो रही थी, वहाँ इस बात की चिंता भी होने लगी कि क्या वह ज़िंदगी भर इसी प्रकार घोड़ा ही बना रहेगा।

थोड़ी देर बाद ज़मीन्दार ने अपने नौकरों को आदेश दिया कि वे घोड़े पर लगाम और ज़ीन लगावे। एक नौकर ने शिव को पुकारा, मगर घुड़साल में सिर्फ़ घोड़ा था, शिव न था। दूसरा नौकर घोड़े को बाहर ले आया, तब शिव ने लात मारी और लगा दौड़ने। ज़मीन्दार के नौकर उसका पीछा करने लगे। वह भागता जा रहा था।
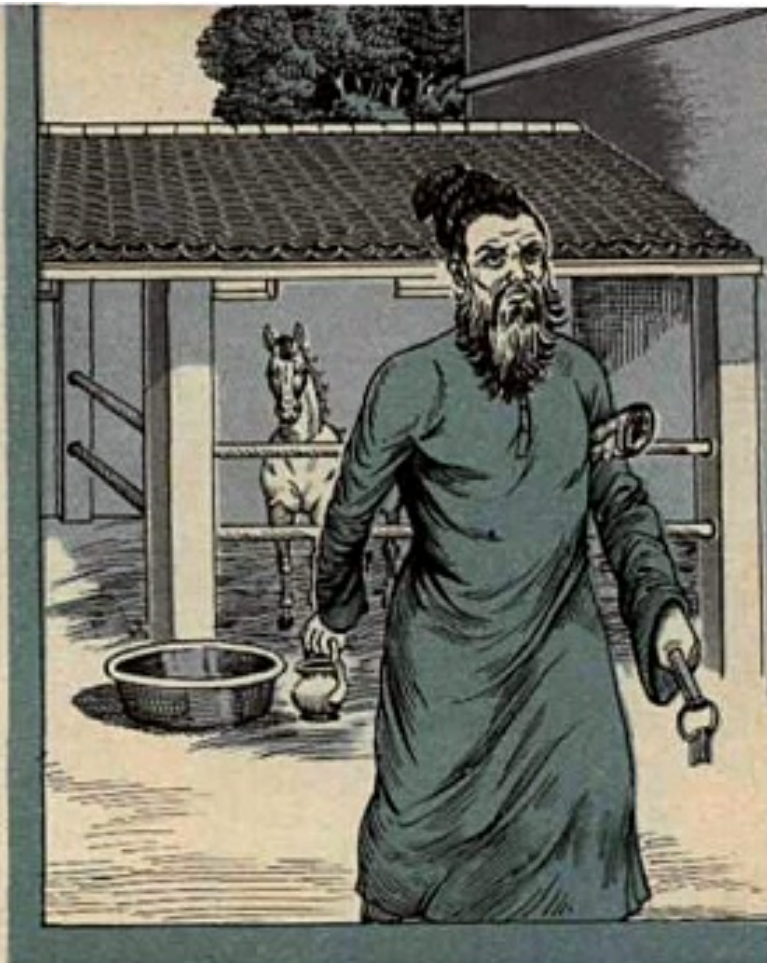
शिव सीधे अपने घर आया और माँ के पास दौड़ पड़ा। उसका विचार था कि उसकी माँ उसे कहीं छिपायेगी। उसने अपनी इस कठिनाई का कारण अपनी माँ से बताया, लेकिन उसकी भाषा उस औरत की समझ में न आयी। उलटे भीतर आये

हुए घोड़े को देख वह घबरा गयी और उसे भगाने की कोशिश की। चिल्ला-चिल्लाकर वह डांटने भी लगी।

इस बीच ज़मीन्दार के नौकर आ पहुँचे। उनके साथ कई लोग यह तमाशा देखने आये। सबने मिलकर शिव को पकड़ लिया और उसे बाहर ले आये। मगर उनके हाथों में आने से बचने की उसने कोशिश की। पिछली टांगों पर वह उठ खड़ा हुआ, तब धूल में लोटने भी लगा। फिर उठकर घर के अन्दर भाग गया। उसकी माँ डर के मारे चिल्लाते बाहर आ गयी।

दस लोगों ने मिलकर शिव को लगाम लगाया, ज़ीन कसकर बाहर खींच लाये। तब उसे पीटते ज़मीन्दार के घर ले आये। बड़ी देर से ज़मीन्दार यात्रा की तैयारी में खड़ा हुआ था, इसलिए वह झट घोड़े पर सवार हो गया। घोड़ा ऊँट की चाल चलने लगा। ज़मीन्दार को आश्चर्य हुआ कि आज अपने घोड़े को क्या हो गया है। उसे सवार करना भी मुश्किल मालूम हुआ।

ज़मीन्दार ने मन में सोचा कि इस घोड़े पर भूत सवार हो गया है। रास्ते के दोनों तरफ़ भीड़ खड़ी थी। सब आश्चर्य के साथ कभी घोड़े और कभी ज़मीन्दार की ओर देखते रह गये। उन्हें देख शिव को हँसी आ गयी। वह रास्ते के बीच पिछली टांगों पर लुढ़क पड़ा और अगली टांगों को हिलाते पागल की तरह हँसने लगा। वह घोड़े की हिनहिनाहट न थी, बल्कि मानव की हँसी थी। इसलिए लोगों को और आश्चर्य हुआ।

ज़मीन्दार नीचे गिरकर धूल में लोटने लगा। वह उठकर धूल झाड़ने लगा। शिव को ज़मीन्दार पर दया आयी। उसने अगली टांगों को जोड़कर प्रणाम किया।

"देखो, घोड़ा ज़मीन्दार को प्रणाम करता है!" लोगों ने आश्चर्य के साथ कहा।

ज़मीन्दार को लगा कि उसकी इज्ज़त धूल में मिल गयी है। उसे पल भर भी वहाँ ठहरना अच्छा न लगा। क़िस्मत की बात थी कि घोड़ा पूर्ववत उठ खड़ा हुआ। ज़मीन्दार उस पर सवार हो गया। वह लगाम कसकर पकड़ने ही वाला था कि घोड़ा हवा से बात करने लगा। ज़मीन्दार आगे की ओर गिर पड़ा। घोड़े की गर्दन पकड़कर नीचे गिरने से बचने की कोशिश करने लगा।

शिव बड़ी देर तक दौड़ता रहा। आखिर वह थककर एक गाँव के निकट पहुँचते ही चाल धीमी करने लगा। गाँववाले सवार की हालत देख रहम खाकर उसकी मदद करने आ पहुँचे। धूल से सने ज़मीन्दार अपना सर झुकाये हुए था। उसने गाँववालों को पहचाना तक नहीं। वह अपमान से दबा जा रहा था।

ज़मीन्दार घोड़े से उतरने की जल्दबाजी में अपना सारा बोझ एक आदमी पर डालकर उतरने की कोशिश करने लगा। मगर ज़मीन्दार के हाथ में एक आदमी का कान आ गया। वह उस गाँव का मुखिया था। वह नाराज़ हो उठा। उसने ज़ोर से ढकेलकर ज़मीन्दार को नीचे गिराया और उस पर लात मारी।

शिव को उस आदमी पर बड़ा क्रोध आया। उसने मुखिये के बाल दांतों से नोचकर खींच लिया। तब भी शिव का क्रोध शांत न हुआ। जो भी आदमी उसके सामने आया, सबको काटना शुरू किया। गाँववाले भाग गये। घोड़े को संबक़ सिखाने के लिए भाले, तलवार, मूसल और लाठियाँ लेकर आ पहुँचे।

शिव गाँववालों के हाथों में हथियार देख काँप उठा। वह जोरों से दौड़ने लगा। आख़िर अपने गाँव पहुँचा और घुड़साल में जा छिपा। नौकरों ने सोचा कि ज़मीन्दार कहीं उतर गया होगा, यह सोचकर घोड़े की खूब मालिश की, दाना व रोटी खिलाया। उनको चबाते शिव सोचने लगा—"मैंने कैसी बेवकूफ़ी का काम किया है? भगवन, मुझे अच्छा दण्ड मिला। अब मामूली आदमी मैं कैसे बन सकता हूँ?"

उसी वक़्त घुड़साल के दर्वाज़े खोलकर बैरागी अन्दर आया। उसने पूछा—"क्यों शिव, घोड़े की ज़िन्दगी कैसी है?"

"वाह, बड़ी अच्छी है, लेकिन मेरा यही डर है कि मैं ऐसा खाना खा रहा हूँ जिसे पचा सकता हूँ कि नहीं।"

"तब तो क्या मैं फिर घोड़ा बन जाऊँ?" बैरागी ने पूछा।

"क्यों?" शिव ने पूछा।

"मैं अपनी पत्नी से तंग आकर ही तो घोड़ा बन गया हूँ। उसने मुझे इस बैरागी के वेश में भी पहचान लिया है। वह मेरा पीछा कर रही है। लो, देखो, वही वह डाइन है! मुझे मानव की ज़िंदगी से घोड़ा का जीवन अच्छा मालूम होता है।" ये शब्द कहते बैरागी ने घोड़े के दोनों कान पकड़कर कहा—"मैं फिर ज़मीन्दार का घोड़ा बन जाऊँ!"

इसके बाद क्या हुआ, शिव नहीं जानता। दूसरे दिन जब वह नींद से जाग पड़ा, तब वह उस घुड़साल में घास पर लेटा पड़ा था। ज़मीन्दार के नौकरों ने उससे कुछ नहीं कहा। उन लोगों ने सोचा कि शिव फिर लौट आया है।

कुछ लोग कहते हैं कि सचमुच यह घटना नहीं घटी है। यह शिव का सपना है! शायद यह बात सच भी हो!
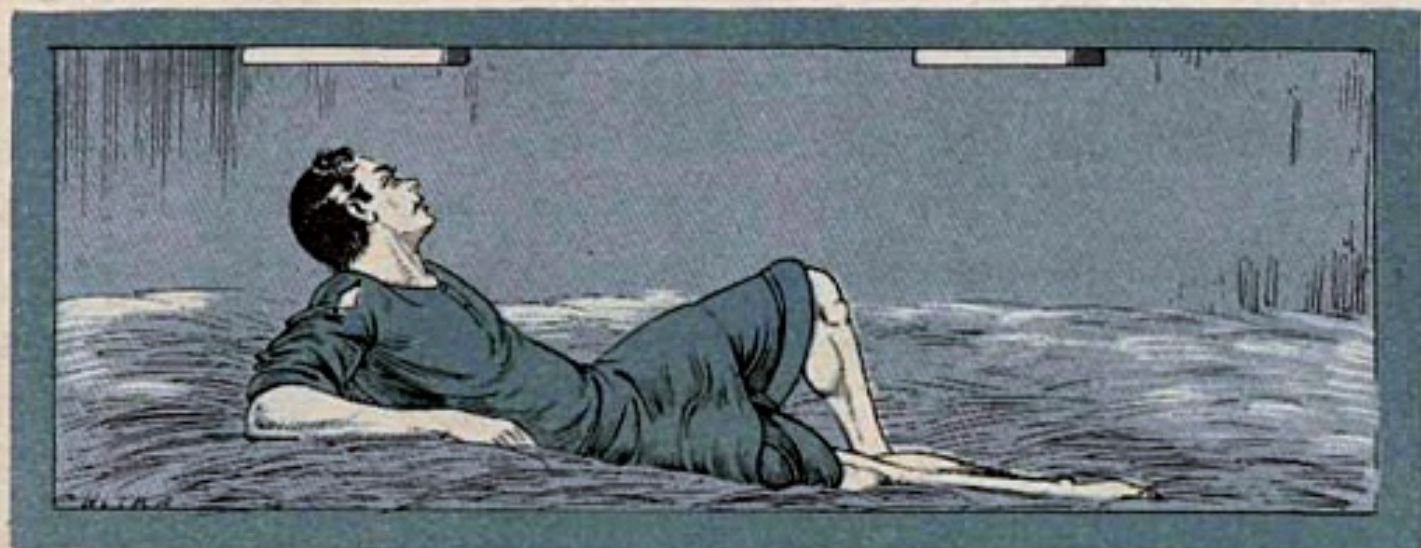
वरदान

एक जंगल के पास छोटा-सा गाँव था। उसमें एक झोंपड़ी बना कर लकड़हारा अपने परिवार के साथ रहा करता था। यों तो वे गरीब थे, फिर भी पति-पत्नी दोनों कड़ी मेहनत करके अपने दिन गुज़ारते थे। लकड़हारे की झोंपड़ी के पास एक अमीर ने अच्छा मकान बनाया। अमीर परिवार सुख से दिन बिताता था, इसलिए गरीब दंपति को ईर्ष्या हुई।

एक दिन गरीब की पत्नी ने कहा–"कुछ लोग बड़े भाग्यवान होते हैं। भगवान की उन पर कृपा होती है। हमारे पास भी काफ़ी धन होता तो हम भी अपने दिन मजे में बिता देते।"

"अरी, इन अमीरों को सुख भोगना कहाँ मालूम है? मेरे पास अगर उतना धन होता तो मैं कैसे सुख से दिन बिताता।" लकड़हारे ने कहा।

"सुनते हैं कि प्राचीन काल में देवता लोगों को दर्शन देकर मुँहमाँगा वरदान दिया करते थे, हमारे पास भी कोई देवी-देवता आकर वर मांगने को कहते तो क्या ही अच्छा होता।" पत्नी ने कहा।

उसकी बात पूरी भी न हो पायी थी कि झोंपड़ी में अचानक एक नारी प्रत्यक्ष हुई। उसको देखते ही उन लोगों को मालूम हो गया कि वह कोई देवी है!

"मैं देवी हूँ। तुम्हें तीन वर दे देती हूँ। इससे अधिक माँग नहीं करना। अब से तुम लोग जो तीन वर माँगोगे, वे तीनों प्राप्त होंगे।" ये शब्द कहकर देवी अंतर्धान हो गयी।

देवी से वरदान पाकर पति-पत्नी दंग रह गये। वे शीघ्र यह निश्चय नहीं कर पाये कि कैसे वर माँगे जाय!

"मुझ से पूछो तो मैं यही चाहूँगी कि हम भी धनी बनकर बड़े लोगों की तरह ज़िंदगी बितावे।" पत्नी ने सलाह दी!

हरिशंकर द्विवेदी

"तुम्हारा सर! धन होने मात्र से क्या हुआ? बीमारियों से छुटकारा पा सकेंगे? चोरों से बच जायेंगे? इसलिए अच्छी तंदुरुस्ती और दीर्घ आयु हो तो बड़ा उत्तम होगा!" पति ने समझाया।

"अरे गरीब की जिंदगी सौ साल जीने से फ़ायदा ही क्या है?" पत्नी ने कहा।

"यह बात भी सही है। इसलिए हम दोनों खूब सोच-समझकर वर माँग लेंगे।" पति ने समझाया।

इसके बाद लकड़हारे की पत्नी ने चूल्हा जलाते कहा-"इस जून के लिए बढ़िया मछलियाँ हों तो क्या ही अच्छा होगा!"

उसकी बात पूरी न हो पायी थी कि छत से मछलियाँ आ गिरीं।

पति ने समझ लिया कि तीन वरों में से एक चुक गया। उसने अपनी पत्नी को डांटते हुए कहा-"पगली कहीं की। तुमने कैसा वर माँगा? इससे अच्छा तो यह होता कि तुमने यह क्यों न चाहा कि ये सब मछलियाँ माला बनकर तुम्हारे गले में क्यों न गिरे!" दूसरे ही क्षण में वे सब मछलियाँ एक माला बनकर लकड़हारे की पत्नी के गले में चमकने लगीं।

"तुमने कौन सा अच्छा वर माँगा? मेरी शिकायत करते हो? तुमने भी तो एक वर बेकार कर दिया?" ये शब्द कहते उसने अपने गले से मछलियों की माला हटानी चाही। मगर वह माला उसके गले से चिपक गयी थी, निकाले भी नहीं निकलती थी।

"छी छी: तुमने मछलियाँ खाने से भी मुझे वंचित कर दिया। यह माला निकल न आवे तो मैं फाँसी लगाकर मर जाऊँगी। पत्नी ने कहा।

लाचार होकर लकड़हारे ने तीसरा वर माँगा कि उसकी पत्नी के गले से मछलियों की माला निकल जाय।

शिथिलालय

[२९]

[रात के वक्त शिखिमुखी के दल को वृच्छिक जातिवालों ने बन्दी बनाया। उस जाति के नेता ने उन्मत्त कैथे की जो बात कही, उसे सुनकर नांगसोम उसकी खोज में चला गया और पहरेदार के हाथ-पैर बांध दिया। वह चट्टान के साथ शिखिमुखी के दल के सोनेवाले पहाड़ी आँचल की ओर लुढ़कने लगा। इसके बाद–]

गुफा में सोनेवाले वृच्छिक जाति के नेता तथा गुफा के सामने ऊँघनेवाले शिखिमुखी और उसके अनुचर पहाड़ पर से लुढ़कने वाली चट्टान की आवाज़ सुनकर डर गये। पहरेदार भी लुढ़कता आ रहा था। उन लोगों ने सोचा कि भूकंप के कारण पहाड़ की चोटी टूटकर नीचे गिर रही है। शिखिमुखी अपने अनुचरों को सावधान कर ही रहा थ। कि इतने में गुफा से वृच्छिक जाति का नेता बिजली की भांति बाहर दौड़ आया।

"तुम सब दूर भाग जाओ! भूकंप है, भूकंप। भाग न जाओ तो मर जाओगे।" वृच्छिक जाति का नेता चिल्ला पड़ा।

नेता की चेतावनी सुनकर सब लोग भाग ही रहे थे कि इतने में बड़ी ध्वनि के साथ चट्टान तथा थोड़ी देर बाद पहरेदार नीचे आ गिरे। भाग्य की बात

खबर देने के लिए मैं पहाड़ पर से लुढ़ककर यहाँ आया हूँ।" पहरेदार की बातों ने वृच्छिक जाति के नेता, शिखिमुखी और विक्रमकेसरी को भी आश्चर्य में डाल दिया। शिखिमुखी ने अपने अनुचरों को देख समझ लिया कि उनमें नांगसोम नहीं है। वह यह बात विक्रमकेसरी से कहने ही जा रहा था कि इतने में वृच्छिक जाति का नेता कांपते हुए बोला—"तुम लोगों में से एक उन्मत्त कैथे की खोज़ में गया है। अगर वह हिम्मत करके वह फल खा जायगा तो खतरे में फँस जायगा। अब हम क्या करे?"

थी कि चट्टान ऐसी जगह आ गिरी, जहाँ पर कोई आदमी न था। मगर पहरेदार चीखते-चिल्लाते अपनी जाति के दो आदमियों पर जा गिरा।

वृच्छिक जाति का नेता नीचे गिरकर कराहनेवाले पहरेदार के पास पहुँचा और पूछा—"यह कैसी बात है? तुमने हाथ-पैर क्यों बांध लिये?"

पहरेदार लड़खड़ाते खड़ा हो गया और बोला—"हमने इम्यु जाति के जिन लोगों को बन्दी बनाया, उनमें से एक ने मेरे पास आकर चोरी से मुझ पर आक्रमण किया और मेरे हाथ-पैर बांध दिये। यह

"तब तो जल्दी हम नांगसोम के पास पहुँचकर उस फल को खाने से उसे रोक देंगे। मगर यह तो बताओ कि उस फल को खाने से कैसा खतरा उत्पन्न होनेवाला है?" शिखिमुखी ने पूछा।

"वृच्छिक जाति के नेता को छोड़ और कोई भी व्यक्ति उस फल को खाकर हज़म नहीं कर सकता। मैंने इधर दो दिन पहले मेरे बन्दी—चोटीवाले पुजारी-से वह फल खिलाकर उसके मुँह से सच्ची बातें कहलवाना चाहता था।" वृच्छिक जाति के नेता ने कहा।

इस पर शिखिमुखी ने वृच्छिक जाति के नेता से कहा–"नांगसोम किसी । धोखा देकर उन्मत्त कैथे की खोज में नहीं गया है। इस प्रदेश की आब-हवा से उसका चित्त भ्रमित हो गया है। हम तुम्हारे मित्र हैं। इसलिए शिथिलालय की खोज में हम तुम्हारी सब तरह से सहायता करेंगे। चलो, पहले हम लोग नांगसोम को खोज-ढूंढ़कर पकड़ लायेंगे।"

वृच्छिक जाति के नेता ने अपने दल के लोगों से बताया कि अगर अब तक नांगसोम ने उन्मत्त कैथा खा लिया हो तो मैं उसे वृच्छिक माता की बलि चढ़ाऊँगा। इसके बाद शिखिमुखी से बोला–"चलो, कैथा खाकर खतरे में पड़ने के पहले ही हम नांगसोम को पकड़ लायेंगे।"

सब लोग वृच्छिक जाति के नेता के पीछे उन्मत्त कैथे के पेड़ोंवाले तालाब की ओर चल पड़े। लेकिन इस बीच में नांगसोम ने पेड़ पर चढ़कर एक उन्मत्त कैथा खा लिया था। उस फल के खाने के कुछ क्षण बाद उसे लगा कि नशा चढ़ता जा रहा है और जमीन, पेड़-पौधे, पहाड़ आदि घूम रहे हैं।

"मैंने उन्मत्त कैथा खा लिया है। मैं पागल होता जा रहा हूँ। इस उन्मत्त अवस्था में ही मैं भूगर्भ में स्थित शिथिलालय का पता लगा सकूँगा। शिथिलालय और वृच्छिक माता का मंदिर क्या दोनों एक ही हैं? लो, वही शिथिलालय है! वही वृच्छिक माता का मंदिर है!" चिल्लाते हुए नांगसोम बाल नोचते पहाड़ी रास्ते पर दौड़ने लगा।

नांगसोम को पकड़ने के लिए शिखिमुखी का दल पीछा करने लगा। मगर पहाड़ी घाटियों और वृक्षों के बीच से केवल उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी, लेकिन
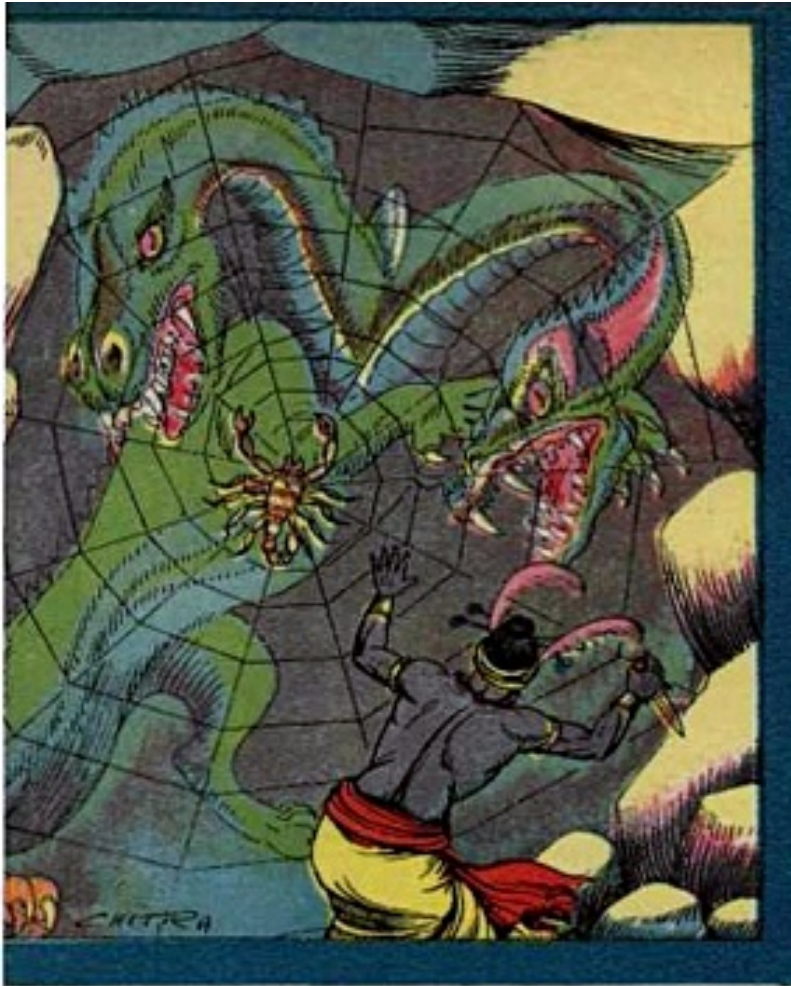
उसका पता नहीं लग रहा था। सूर्योदय के होने तक वे लोग उस आवाज़ की दिशा में खोजते रहें, आखिर थककर एक पहाड़ी के आंचल में पेड़ों के नीचे लुढ़क पड़े।

उन्मत्त कैथेवाले पेड़ों के तालाब से सटकर एक दूसरा जंगल था। वहाँ पर वृच्छिक जाति के दल की निगरानी में पुजारी का दल बंदी था। आधी रात के समय पुजारी को नांगसोम की चिल्लाहट सुनाई दी। पुजारी ने तुरंत सवरगीध तथा अपने अन्य अनुचरों को चेतावनी दी, तब वृच्छिक जाति के दल से कहा–

"चिल्लानेवाले व्यक्ति पर वृच्छिक माता हावी हो गयी है, वह महान भक्त है। उसका अनुसरण करने पर हमें वृच्छिक माता का मंदिर दिखाई देगा। चलो, देरी न करो।"

वृच्छिक जाति के लोग भोले थे। इसलिए शिथिलालय के पुजारी की बातों पर यक़ीन करके वे सब नांगसोम की खोज में चल पड़े। सूर्योदय हो रहा था, तब उन लोगों को एक गुफा के सामने नांगसोम दिखाई पड़ा। गुफा के आगे मकड़ी का जाला फैला हुआ था। उसमें एक राक्षसी बिच्छू फँस गया था जो बाहर निकलने को छटपटा रहा था।

नांगसोम उस जाले के सामने एक तलवार लिए इधर-उधर दौड़ते चिल्लाने लगा–"बचाओ, मुझे बचाओ! एक भयंकर जलजंतु मुझे निगलने जा रहा है।"

नांगसोम की घबराहट और चिल्लाहट को देख पुजारी ने समझ लिया कि नांगसोम उन्मत्त कैथा खाकर उन्मत्त हो गया है। पुजारी के मन में यह आशा भी बंध गयी कि वृच्छिक जाति के विश्वास के अनुसार अब शिथिलालय का पता लगाया जा सकता है।

पुजारी ने उस उन्मत्त व्यक्ति के पास पहुँचकर पूछा–"तुम इम्यु जाति के हो न? तुमको मैंने गोलभरा गाँव में देखा है। तुम्हारा नाम नांगसोम है न?"

नांगसोम पुजारी की बातें सुनते ही चौंककर घूम पड़ा और बोला–"चोटीवाले महात्मा तुम कौन हो? सिद्ध पुरुष जैसे लगते हो? मुझे इस जंतु से बचा लो। मैं तुम्हारा एहसान कभी नहीं भूलूँगा।" ये शब्द कहते नांगसोम पुजारी के चरणों पर गिर पड़ा।

पुजारी ने नांगसोम को उठाकर समझाया–"यह जलजंतु नहीं है। दो सरों वाला भेरुण्ड है। पल भर में इसे मरवा डालता हूँ।" यह कहते उसने सवरगीध को आदेश दिया–"सवरगीध, उस पिशाचिनी को टुकड़े-टुकड़े कर दो।"

दूसरे ही क्षण सवरगीध ने तलवार से बिच्छू पर प्रहार किया। उसके दो टुकड़े हो गये। उसके खून से मकड़ी का जाला भीग गया। नांगसोम ने खून को देख काँपते हुए पुजारी के पैर पकड़े। तब बोला–"मैं खून की धारा में बहता जा रहा हूँ। तैरना नहीं जानता। तुम सिद्ध व्यक्ति हो! मुझे बचाओ।"

शिथिलालय के पुजारी ने नांगसोम के सर पर हाथ फेरा और कहा–"तुम डरो मत। खून की धारा को मैं झरना बना देता हूँ। तुम उससे होकर भूगर्भ में स्थित शिथिलालय तक पहुँच जाओ।"

"सिद्ध गुरु की जो आज्ञा!" इन शब्दों के साथ नांगसोम तेजी के साथ आगे बढ़ा।

पुजारी ने अपने अनुचरों से कहा–"इसके भरोसे हमें अपने लक्ष्य पर पहुँचना है। फिर भी कह नहीं सकते कि कहाँ पर क्या है? इसका पागल मन शायद हमें शिथिलालय तक पहुँचा दे। मगर हमें सावधान रहना है कि यह कहीं भाग न

जाय।" इसके बाद पुजारी भी नांगसोम के पीछे चलने लगा।

नांगसोम पहाड़ी टीलों, झाड़ियों से होते आगे बढ़ा जा रहा था। बाक़ी लोग उसके पीछे नाना प्रकार की यातनाएँ भोगते चल रहे थे। उन्मत्त कैथे के जहर ने नांगसोम के दिमाग पर बड़ा असर डाल दिया था। उसे छोटे से छोटा प्राणी भी हाथी के बराबर दीखने लगा। ऐसे मौक़े पर वह चिल्ला पड़ता—"सिद्ध गुरु! तुम्हीं बचाओ।"

दुपहर तक सब लोग नांगसोम के पीछे एक ऊँचे पहाड़ पर पहुँचे। नीचे एक घाटी थी। उस घाटी में घने और ऊँचे बरगद के पेड़ थे।

नांगसोम ने घाटी की ओर देखा और बाल नोचते हुए कहा—"सिद्ध गुरुजी! शिथिलालय उसी घाटी में है! ओह, कितना सोना? कितने रत्न? लो, मंदिर पर सोने का कलश चमक रहा है!"

पुजारी ने घाटी में झांक कर देखा। पर उसे कुछ दिखाई न दिया। लंबी लंबी जटाओंवाले बरगद के वृक्ष उसे दिखाई पड़े।

"यह तो पागल का प्रलाप है! इस कमबख़्त ने हमें पहाड़ और जंगलों में घुमाकर परेशान कर दिया है। इसे घाटी में ढकेल दे तो छुट्टी मिल जाय!" शिथिलालय के पुजारी ने क्रोध में आकर कहा।

पुजारी क़ी बातें सुनकर सवरगीध ने कहा—"गुरुदेव! आज्ञा दीजिये, मैं इस पागल को घाटी में ढकेल दूँ या टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दूँ?" ये शब्द कहते उसने तलवार उठायी।

दूसरे क्षण वृच्छिक जाति के लोगों में कोलाहल पैदा हुआ। उन लोगों ने पत्थर की बनी कुल्हाड़ियाँ उठाकर कहा—"इम्भु

जाति के इस आदमी की कोई हानि नहीं होनी चाहिए। यह वृच्छिक माता का गणाचारी है। शायद उसके कहे मुताबिक़ इस घाटी में वृच्छिक माता का मंदिर हो! कौन जाने?"

पुजारी कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में सवरगीध हाथ हिलाते बोल पड़ा—"यह बात भी सच है, गुरुदेव! क्या मैं हवा में उड़कर घाटी में उतर जाऊँ?"

पुजारी ने सवरगीध को डांट बतायी, तब कहा—"लगता है, तुमने ज्यादा पी लिया है! इसीलिए बकते हो! खबरदार! तुमको लंगूर बनाकर इन पेड़ों पर छोड़ करके चला जाऊँगा।"

"गुरुदेव भगवान के लिए ऐसा न कीजिये। इस जंगल में पेड़ों पर जीना मुश्किल है..." सवरगीध ने कहा।

सवरगीध की बात पूरी भी न हो पायी थी कि शिथिलालय का पुजारी चौंककर गरज पड़ा—"लो, वह कमबख्त शबर शिखिमुखी और उसका दल आ गया!"

शिखिमुखी पहाड़ पर खड़े हो चिल्ला पड़ा—"नांगसोम को बाहर खींच लो।" इसके बाद शिथिलालय के पुजारी को देख

बोला—"दुष्ट! कितने दिन बाद हाथ लग रहे हो! भागने की कोशिश करोगे तो तुम्हारी पीठ में भाला या बाण जा चुभेगा।"

पुजारी सोच ही रहा था कि कैसे भाग जाय। तुरंत उसके दिमाग में कोई उपाय सूझ पड़ा। झट वह आगे कूद पड़ा। नांगसोम को अपने कंधे पर डाल पहाड़ी किनारे की शिलाओं के बीच भाग गया।

पुजारी का हाल अब ऐसा था कि मानों साँप के मुँह से बचकर शेर के मुँह में जा फँसा हो! उधर से जांगला लंगड़ाते आया और गरजकर बोला—"दुष्ट, अब

तुम जान बचाकर कहीं भाग नहीं सकते।" ये शब्द कहते जांगला पुजारी पर हमला कर बैठा।

पुजारी ने नांगसोम को कंधे से उतारा, कमर से कटार निकालकर जांगला की छाती पर भोंकना चाहा। लेकिन इस बीच जांगला पुजारी पर कूद पड़ा, जिससे वह कटार जांगला के कंधे में जा चुभा। कटार के वार की परवाह किये बिना ही जांगला ने पुजारी की गर्दन पकड़नी चाही। पर पुजारी अपना सर घुमाकर पहाड़ की ओर झुक गया जिससे पुजारी की चोटी जांगला के हाथ में आ गयी।

जांगला के घाव से खून बह रहा था। फिर भी वह पुजारी की चोटी को ढीला किये बिना उसे पहाड़ पर खींचने की कोशिश करने लगा। पुजारी इस डर से चटपटाने लगा कि कहीं वह घाटी में गिर न जाय।

उस समय शिखिमुखी दौड़कर वहाँ आ पहुँचा और बोला—"जांगला, तुम्हारी स्वामि-भक्ति प्रशंसनीय है। इस दुष्ट पुजारी को हम ऊपर खींच नहीं सकते। सवर नेता की पुत्री नागमल्ली ने पुजारी की चोटी माँगी है।" इन शब्दों के साथ शिखिमुखी ने तलवार से पुजारी की चोटी काट डाली। दूसरे ही पल में पुजारी चिल्लाते हुए गहरी घाटी में जा गिरा।

इस बीच में किसी ने इस बात का ख्याल नहीं किया कि नांगसोम का क्या हाल है? पुजारी के उतारने पर वह एकटक विशाल बरगदों की ओर देखता रहा। इतने में उसे शिथिलालय के पुजारी की कराहट सुनायी दी। इस पर नांगसोम चिल्ला उठा—"देखो, देखो, वही शिथिलालय है!" तब वह उस घाटी के बरगद के पेड़ों की ओर दौड पड़ा।

(और है)

आधा राज्य

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा–"राजन, केवल श्रम करने से कार्य में सफलता प्राप्त होना संदेह जनक है। इस के उदाहरण स्वरूप में तुमको प्रताप की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए तुम सुनो।"

बेताल यों कहने लगा :–पुराने जमाने में एक देश में एक बड़ा लुटेरा था। वह चोरी करने की सब प्रकार की विद्याओं में निपुण था। उसने अनेक घरों को लूटा और गुप्त रूप से बड़ी संपत्ति छिपा कर रखी।

उस लुटेरे को किसी ने नहीं देखा था। फिर भी लोगों ने उसे 'प्रचण्ड' नाम दिया। उसका असली नाम कोई जानता

बेताल कथाएँ

खाली नहीं था। उसने अब तक जो संपत्ति इकट्ठा की, उसे लेकर दूसरे देशों में जाना भी मुश्किल था। खाली हाथ जाने से उसे कोई पहचान नहीं सकता, मगर इतने सालों तक मेहनत करके जो संपत्ति कमाई, उसे छोड़ जाना मूर्खता है। उस संपत्ति को साथ ले जाने से रास्ते में कोई उस पर शक कर पकड़ लेगा और उसे राजा क़ो सौंपकर राजकुमारी के साथ शादी करेगा। इसलिए उसने सोचा कि इस हलचल के कम हो जाने पर जब कि लोग भी उसे भूल जायेंगे या राजकुमारी का किसी के साथ विवाह होने तक उसी राज्य में ठहर कर तब वह दूसरे देश में जायगा और आराम से जीयेगा। प्रचण्ड ने यह निर्णय करके चोरी करना बंद किया। सब से बचने के ख्याल से मजदूरी करते गरीबी की ज़िंदगी बिताने लगा।

एक साल बीत गया। राज्य भर में कहीं चोरियाँ न होती थीं। जनता भी उस लुटेरे को भूल चुकी थी। लोग कहने लगे कि वह डाकू या तो मर गया या कहीं भाग गया है।

राजा के सिपाहियों में प्रताप नामक एक सरदार था। अनेक युद्धों में अपनी

न था। उसे पकड़ने के लिए उस देश के राजा ने हज़ारों प्रयत्न किये, आखिर ऊबकर उसने सारे देश में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो व्यक्ति प्रचण्ड को पकड़ कर उसे सौंपेगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया जायगा।

राजकुमारी बड़ी सुंदर थी। उसके साथ विवाह करने अनेक राजकुमारों ने प्रचण्ड को पकड़ने का निर्णय किया।

अब प्रचण्ड के सामने बड़ी जटिल समस्या पैदा हो गयी। अनेक राजकुमारों की आँखें उसे ढूँढ़ रही हैं, ऐसी हालत में चोरी या डाका डालने जाना खतरे से

वीरता और साहस का परिचय देकर उसने राजा की प्रशंसा प्राप्त की थी। उसने जब पहली बार राजकुमारी को देखा, तभी वह उस पर मोहित हो गया। वह यह सोचकर बहुत ही निराश हुआ कि उसके जैसे साधारण योद्धा को राजकुमारी के साथ विवाह करने का मौक़ा नहीं मिल सकता।

उन्हीं दिनों में उसने राजा का ढिंढोरा सुना। प्रचण्ड को पकड़ने के लिए प्रताप ने जैसी कोशिश की, शायद किसी ने भी की हो। वह वेश बदल कर नगर के कोने कोने में इस प्रकार घूमता रहा कि कहीं ऐसा व्यक्ति कम से मिल जाय जो प्रचण्ड को जानता हो।

प्रताप की इस मेहनत का एक कारण और था। उसे इस बात का यक़ीन हो गया कि राजकुमारी उसके साथ प्यार करती है। क्यों कि एक बार राजा और राजकुमारी के समक्ष उसने राजा की घोषणा का उललेख कर कहा था—"कोई साधारण आदमी प्रचण्ड को पकड़ लायगा तो राजकुमारी के साथ अन्याय न होगा?" इस पर राजकुमारी ने कहा था—"पिताजी की आज्ञा का पालन करने से उत्तम धर्म बेटी के लिए और कौन हो सकता है? अलावा इसके बड़ा साहसी और पराक्रमी ही प्रचण्ड को पकड़ सकता है। प्रचण्ड की शक्तियों पर मुझे पूरा विश्वास है।"

उस दिन से लेकर प्रताप प्रचण्ड को पकड़ने का दुगुना श्रम करने लगा। मगर उसका श्रम बेकार हो गया। लोगों के मुंह से यह सुन कर वह हताश हो गया कि प्रचण्ड या तो मर गया है, अथवा देश छोड़ कर भाग गया है।

फिर भी प्रताप के दिल के किसी कोने में थोड़ी सी आशा बच रही, लेकिन राजा जब अपने मंत्रियों के साथ राजकुमारी के योग्य वर की खोज करने के संबंध में मशविरा करने लगा, तब प्रताप की बची-खुची आशा भी जाती रही। यों तो अड़ोस-पड़ोस के देशों में राजकुमारी के योग्य वर थे, मगर सवाल यह था कि उनमें किसको चुना जाय।

इस हालत में प्रताप ने हिम्मत की। एक दिन शाम को राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ उद्यान में टहल रही थी, हठात प्रताप वेश बदलकर आया और राजकुमारी को उठा ले गया। उसने राजकुमारी को अपने घर में छिपा रखा।

यह समाचार राजा को मिनटों में मालूम हो गया। राजा ने तुरंत नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया–"जो राजकुमारी को लाकर मुझे सौंपेगा, उसे आधा राज्य दिया जायगा।"

कई लोगों ने सोचा कि प्रचण्ड ही राजकुमारी को उठा ले गया होगा। लेकिन ढिंढोरा सुनने पर प्रचण्ड के मन में नई आशा पैदा हो गयी। अगर वह राजकुमारी को राजा को सौंप देगा तो उसे आधा राज्य मिलेगा। उस आधे राज्य में वह वैभव के साथ ज़िंदगी बिता दे तो कोई भी उस पर शक न करेगा। इसलिए उसने राजकुमारी की खोज प्रारंभ कर दी।

राजकुमारी को उठा ले जाने की शक्ति रखनेवाले उस नगर में चार-पाँच योद्धाओं से ज्यादा न थे। प्रचण्ड को बड़ी आसानी से यह मालूम हो गया कि इस घटना के समय वे सब योद्धा कहाँ-कहाँ थे। उसे प्रताप का समाचार ही संदेहजनक मालूम हुआ।

आधी रात के क़रीब प्रचण्ड बड़ी सरलता से प्रताप के घर में घुस आया।

एक कमरे में उसे प्रताप और राजकुमारी की बातचीत सुनाई दी।

"तुम से किसने कहा कि मैं तुम से प्यार करती हूँ। मुझ पर यह ज़िम्मेदारी है कि जो व्यक्ति प्रचण्ड को पकड़ लायगा, उसके साथ मैं शादी करूँ! ऐसी हालत में मैं किसी और व्यक्ति को कैसे प्यार कर सकती हूँ? तुमने जल्दबाज़ी में आकर अपनी जान को खतरे में डाल लिया है। हो सके तो तुम आज रात को ही मुझे राजमहल में पहुँचा दो। तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हारा नाम प्रकट न करूँगी।" राजकुमारी कह रही थी।

"तुम्हारे वास्ते मैं अपनी जान देने को भी तैयार हूँ। तुम मेरे हाथों में पड़ गयी हो, मैं तुमको कैसे छोड़ सकता हूँ? इसलिए तुम मेरे साथ विवाह करने को मान जाओ। हमारा विवाह हो जायगा तो राजा भी हमें क्षमा कर देंगे। प्रचण्ड अब रहा ही कहाँ? वह कभी का मर गया है। उसे कौन पकड़ेगा और तुम्हारे साथ विवाह कर सकेगा।" प्रताप समझा रहा था।

इसी समय दर्वाज़े पर दस्तक हुई। प्रताप राजकुमारी को रोक ही रहा था कि उसने शीघ्र दर्वाज़ा खोल दिया।

प्रचण्ड न भीतर प्रवेश करके राजकुमारी से कहा–"मैं तुम्हारी खोज में आया हूँ। राजा तुम्हारे वास्ते घबरा रहे हैं। जल्दी घर चलो।"

प्रताप प्रचण्ड पर शेर की भांति उछल पड़ा। दोनों आपस में लड़ने लगे। यह आवाज सुन कर प्रताप के सेवक दौड़े आये।

"इसे पकड़ लो। यही प्रचण्ड है।" प्रताप ने अपने नौकरों को चेतावनी दी। प्रताप ने यह सोचकर ये शब्द कहे थे कि चाहे वह आगंतुक कोई भी क्यों न हो, राजकुमारी और राजा को भी यह विश्वास दिला दे कि यही प्रचण्ड है, तो उसकी इच्छा की पूर्ति होगी। उसका विश्वास था कि प्रचण्ड मर गया है।

प्रताप के सेवकों ने प्रचण्ड को पकड़ लिया। प्रचण्ड को साथ लेकर प्रताप राजा के पास पहुँचा। उसके साथ राजकुमारी भी चली।

"महाराज, मैंने प्रचण्ड को बन्दी बनाया है।" ये शब्द कहते उसने राजा को प्रचण्ड को दिखाया। राजा इस बात के लिए प्रसन्न था कि उसकी खोई राजकुमारी प्राप्त हो गयी है, पर प्रताप की बातें सुनकर वह चकित हुआ और प्रचण्ड की ओर मुड़कर पूछा–"तुम कौन हो?"

"मेरा नाम जसबीर है, महाराज! मैं मज़दूरी करके अपना पेट पालता हूँ।" प्रचण्ड ने जवाब दिया।

"यह कहना झूठ है कि यही व्यक्ति प्रचण्ड है। क्योंकि प्रताप ने ही मुझ से कहा था कि प्रचण्ड मर गया है। मुझे प्रताप उठा ले गया था। मुझे छुड़ानेवाला आदमी यही जसबीर है। इसलिए इसे पहले पुरस्कार दिया जाना चाहिए।" राजकुमारी ने कहा।

"मैं ने वचन दिया है, उससे टल नहीं सकता। मैं कल ही जसबीर को आधा राज्य दूंगा। अरे, कौन है, वहाँ? कल फ़ैसला होगा, तब तक इस प्रताप को क़ैद में डाल दो।" राजा ने कहा।

राजभट प्रताप को पकड़कर ले गये।

इस पर प्रचण्ड ने राजा से कहा—"महाराज, मेरा निवेदन है—आपने यह ढिंढोरा पिटवा दिया था कि प्रचण्ड को बन्दी बनानेवाले के साथ आप राजकुमारी का विवाह करेंगे। इसी के लिए ये सब अन्याय हो रहे हैं। यदि आप अपने वचन को वापस ले और राजकुमारी को अपनी इच्छा के अनुसार विवाह करने की अनुमति दे तो मैं आपको प्रचण्ड का पता बता दूंगा। वह न मरा है और न राज्य छोड़कर कहीं गया भी है।"

"सच कहते हो? बताओ, वह प्रचण्ड कहाँ पर है?" राजा ने आतुरता से पूछा।

"मैं ही प्रचण्ड हूँ, महाराज!" प्रचण्ड ने कहा।

राजा चकित हो, थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब बोला—"अच्छी बात है, तुम्हारे ठहरने के लिए यहीं पर प्रबंध कर देता हूँ। जाकर सो जाओ।" राजा ने कहा।
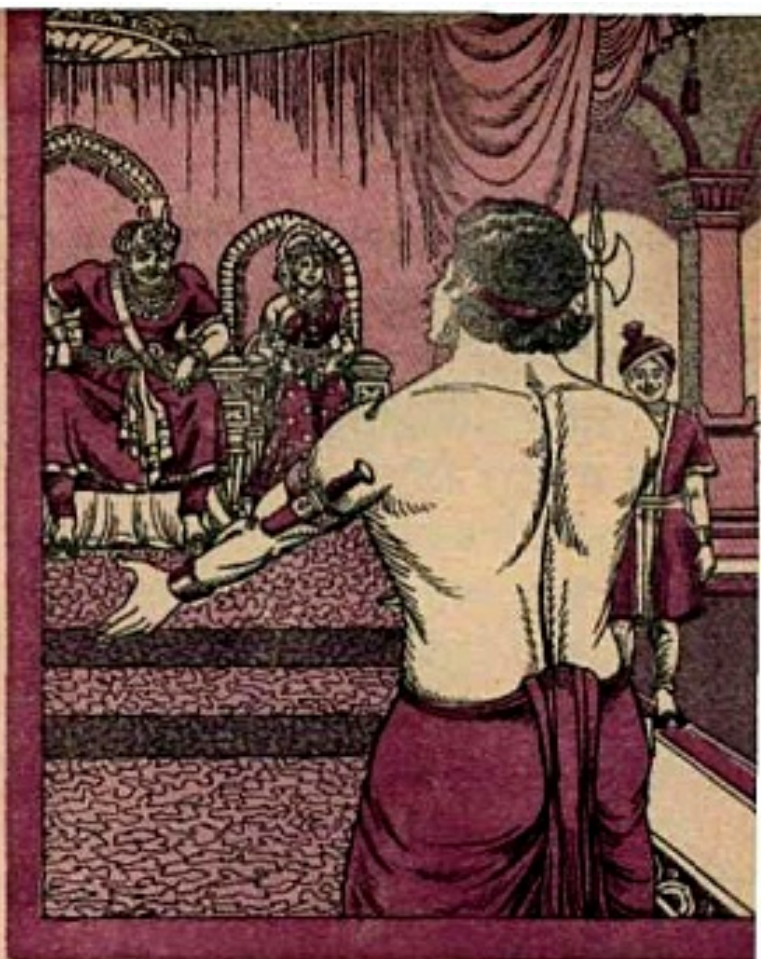
दूसरे दिन राजदरबार में प्रताप का फ़ैसला हुआ। राजा ने उसे ज़िन्दगी भर जेलखाने की सजा दी। इसके बाद राजा ने घोषणा की कि राजकुमारी को लौटानेवाले को मैं आधा राज्य देकर उसके साथ राजकुमारी का विवाह करूँगा।"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन, जब सारी हालत उसके अनुकूल थी, तब प्रचण्ड ने अपना रहस्य प्रकट करके क्यों आफ़त मोल ली? प्रचण्ड को पकड़ लानेवाले प्रताप के साथ राजकुमारी का विवाह न करके राजा ने राजकुमारी का विवाह प्रचण्ड के साथ क्यों किया? इन

संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने कहा–"राजा का व्यवहार उचित ही है। राजकुमारी की बातों से यह स्पष्ट हो गया कि प्रचण्ड को पकड़ लाने का श्रेय प्रताप को नहीं है। यह कहना होगा कि प्रचण्ड को वास्तव में प्रचण्ड ही पकड़ लाया। इसी कारण राजा ने राजकुमारी का विवाह उसके साथ करने का निश्चय किया होगा। या प्रचण्ड ने राजा से कहा था कि राजकुमारी का विवाह उसकी इच्छा के मुताबिक़ हो। इसलिए शायद हो सकता है कि प्रचण्ड के साथ शादी करने की राजकुमारी भी इच्छा रखती हो। लुटेरा मानकर राजा प्रचण्ड को दण्ड नहीं दे सकता। क्योंकि राजकुमारी को राजा को सौंपकर वह आधे राज्य का अधिकारी हो गया। कोई भी राजा अपने बराबर के राजा को दण्ड नहीं दे सकता। प्रचण्ड के खुद प्रकट होने का एक कारण भी है। राजा प्रचण्ड के बारे में विवरण जानने का अवश्य प्रयत्न करेगा, उस वक़्त उसका रहस्य प्रकट हो सकता है। अलावा इसके ऐसा मालूम होता है कि प्रचण्ड भी राजकुमारी के साथ प्यार करता है। वरना वह राजकुमारी के खोने का समाचार सुनते ही उसकी खोज में नहीं निकलता। यदि वह केवल आधा राज्य के लिए ही निकला होता तो वह अपना रहस्य प्रकट करने के पहले सोच-विचार करता। इसलिए लगता है कि उसने राजकुमारी के सुख की कामना करके ही ऐसा किया होगा।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सिंदबाद की अद्भुत यात्राएँ

सिंदबाद समुद्री यात्राओं से ऊब गया था। उसकी उम्र भी ज्यादा हो गयी थी। जिंदगी में उसने तरह-तरह के कष्ट झेले थे। व्यापार के ज़रिये अपार संपत्ति इकट्ठी कर ली थी। बगदाद में वह सब से बड़ा अमीर भी कहलाता था। खलीफ़ा से उसकी दोस्ती भी थी। जब तब खलीफा सिंदबाद को अपने यहाँ बुलवाता और उसके अनुभव सुनता रहता। ऐसी हालत में सिंदबाद के दिल में बिलकुल यह इच्छा न थी और न उत्साह ही था कि कई सालों तक देशाटन करके यातनाएँ भोगें। उसे अपने घर पर ही रहने की बड़ी इच्छा थी।

मगर उसे अचानक अपनी इच्छा के विरुद्ध एक बार और यात्रा करनी पड़ी। खलीफ़ा हारूनल रषीद ने उसे बुलाकर कहा—"सिंदबाद! मैं इथियोपिया के राजा की चिट्ठी का जवाब भेजना चाहता हूँ। उन के लिए कुछ उपहार भी मैं ने इकटठे किये हैं। उनको मैं तुम्हारे जरिये भेजना चाहता हूँ। तुमको फिर एक बार देखकर वे बहुत खुश होंगे। आज ही तुमको रवाना होना होगा।"

खलीफ़ा से सिंदबाद कैसे कह सकेगा कि समुद्री यात्रा से वह ऊब गया है। अपनी अनिच्छा को खलीफ़ा के सामने प्रकट किये बिना सिंदबाद यात्रा के लिए तैयार हो गया।

खलीफ़ा ने सिंदबाद की यात्रा के खर्च के लिए दस हज़ार दीनार दिये। इथियोपिया के राजा ने नाम एक चिट्ठी और उपहार भी उसके हाथ सौंप दिये। खलीफ़ा के उपहारों में एक लाल मखमली बिस्तर, दूसरे रंग के दो गद्दे, एक सौ रेशमी थान, सफ़ेद रत्नों से तैयार की गयी एक

सुराही तथा अच्छी नस्ल के अरबी घोड़े वगैरह थे। सिंदबाद इन सब उपहारों को लेकर बस्रा पहुँचा। वहाँ एक जहाज़ पर सवार हुआ। इथियोपिया के राज्य में पहुँचने में जहाज़ को तीन मास लगे। इथियोपिया का राजा खलीफ़ा के उपहार और चिट्ठी पाकर बड़ा खुश हुआ और खलीफा क़ी उदारता की बड़ी प्रशंसा की। इथियोपिया के राजा ने सिंदबाद को वहीं पर रह जाने का अनुरोध दिया, लेकिन वह कुछ ही दिन रहा। तब इथियोपिया के राजा के उपहार लेकर बस्रा के लिए रवाना हुआ।

हवा अनुकूल थी। इसलिए यात्रा आराम से होने लगी। रास्ते में सीन टापू पड़ा, वहाँ पर व्यापारियों ने खरीद-फ़रोख्त किया। जहाज़ ने उस टापू से निकल कर फिर यात्रा चालू की। एक सप्ताह की यात्रा के बाद ज़ोरों की वर्षा होने लगी। माल के भीगने से बचाने के लिए कैनवास ढक दिया गया।

मल्लाह ने मस्तूल पर चढ़कर चारों दिशाओं को देखा। जब वह उतर आया, तब उसका चेहरा स्याह पड़ गया था। वह सब यात्रियों की ओर पागल की तरह देखते दाढ़ी नोचने लगा।

सब ने मल्लाह को घेरकर पूछना शुरू किया—"क्यों परेशान मालूम होते हो?"

"अल्लाह से दुआ मांग लो। अल्लाह को छोड़ कोई हमें बचा नहीं सकता। हम लोग रास्ता भटक गये हैं। किसी खतरनाक समुद्र में पहुँच गये हैं।"

इसके बाद उसने सुंघनी चढ़ायी। कोई पुस्तक पलटकर चिल्ला उठा—"हमने जो सोचा, वही हो गया है। सामने दिखाई देने वाला समुद्र-तट बड़ा भयंकर है। इस समुद्र में जहाजों को निगलने वाले तिमिंगल हैं। उस तट पर खूंख्वार

जानवर तथा भयंकर सांप हैं। मुझे जो कुछ कहना था, कह दिया। अब आप लोगों की इच्छा!"

मल्लाह कुछ कह ही रहा था कि जहाज़ उछल पड़ा। यात्रियों के दिल धड़कने लगे। समुद्र में ऊंची-ऊँची लहरें उठ रही थीं। तीन तिमिंगल समुद्र में हल-चल मचा रहे थे। वे तिमिंगल देखने में पहाड़ों जैसे लगते थे। वे जहाज़ का पीछा कर रहे थे। एक तिमिंगल ने अपना मुंह खोल कर जहाज को पकड़ लिया। सिंदबाद झट पानी में कूद पड़ा। दूसरे ही क्षण तिमिंगल ने जहाज़ को निगल डाला। इसके बाद तीनों तिमिंगल तैरते अपने रास्ते चले गये।

तिमिंगल जब जहाज को निगल रहा था, तब एक तख्ता टूट कर पानी में गिर पड़ा। सिंदबाद उस तख्ते पर बैठ गया, हाथ-पैरों से तख्ते को ढकेलते एक टापू में जा पहुँचा। उस टापू में फलों के पेड़ थे। वहाँ पर सिंदबाद को एक नदी भी दिखाई दी जो तेजी से बह रही थी।

सिंदबाद ने सोचा कि वह नदी ही उसकी रक्षा कर सकती है। वरना उसका
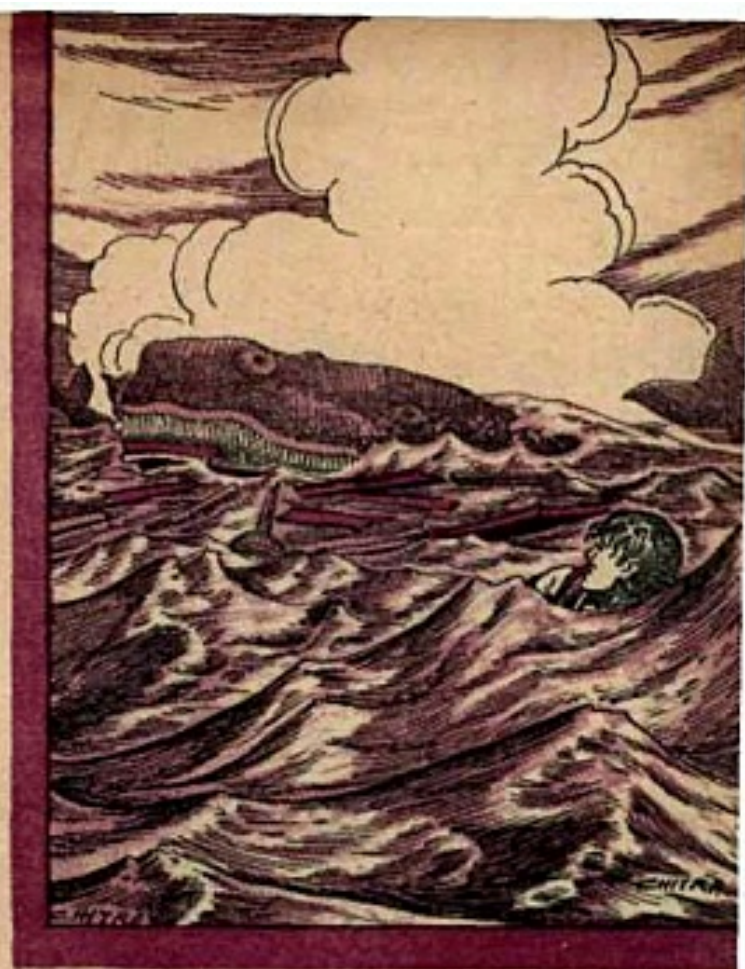
बचना नामुमकिन है। (पिछली बार वह नदी के ज़रिये ही रत्नों के टापू से बच निकला था)। इसलिए उसने एक पेड़ की डालों को इकट्ठा किया, मजबूत लताओं से उनको बांध कर एक डोंगी बनायी, तब उस पर सवार हो धारा में आगे बढ़ा। डोंगी तीर की भांति घुस चली। उस तेजी से लड़खड़ाकर वह फलों के ढेर पर गिर पड़ा।

नदी का वेग बढ़ता जा रहा था। पानी में से झाग निकल रहा था। दूर पर हवा का गुंजन सुनाई दे रहा था। आगे की ओर देखने पर सिंदबाद को लगा

कि अचानक नदी समाप्त हो गयी है। उसे लगा कि वहां पर कोई जल प्रपात है और उसकी ध्वनि सुनाई दे रही है। सिंदबाद डोंगी के साथ उस जल प्रपात में गिर गया। उसने सोचा कि यही उसका अंतिम पल है। उसने भगवान पर भरोसा रखकर आँखें मूंद लीं और डोंगी से लिपट कर लेट गया।

उसे इस बात का ज्ञान था कि डोंगी जल प्रपात तक पहुँच गयी है और वह डोंगी के साथ उस में बहा जा रहा है। लेकिन आश्चर्य की बात थी कि डोंगी जहाँ का तहाँ रह गयी।

उसने विस्मय के साथ आँखें खोल कर देखा। एक जाल में वह डोंगी के साथ फँस गया था। जाल को फेंकने वाले किनारे बैठे थे। उन लोगों ने जाल को खींच कर उसके साथ डोंगी को भी किनारे की ओर खींच लिया।

सिंदबाद सर्दी से कांपते हुये अध मरे की भांति किनारे पर लेटा पड़ा था। एक सफ़ेद दाढ़ीवाले बूढ़े ने बड़े प्रेम से उसका परामर्श किया और उस पर एक कंबल ओढ़ दिया। उसने सिंदबाद के शरीर की मालिश भी की।

बूढ़े के उपचारों से सिंदबाद में थोड़ी ताक़त आ गयी। वह उठकर बैठ सका, मगर बोल नहीं पाया। उस हालत में सिंदबाद को बूढ़ा स्नानागार में ले गया। उसके शरीर को सुगंधित तेलों से मलवा कर स्नान कराया, तब घर ले जाकर बढ़िया भोजन दिया। बूढ़े के घरवालों ने सिंदबाद के प्रति बड़ा प्रेम दर्शाया। बूढ़े की गैर हाज़िरी में भी उसके नौकर सिंदबाद की सेवा करते थे। सिंदबाद बूढ़े के घर में तीन दिन तक रहा।

तीन दिनों के अन्दर सिंदबाद स्वस्थ हो गया। चौथे दिन बूढ़े ने सिंदबाद से

पूछा–"तुम्हें कोई तक़लीफ़ तो नहीं है न? अल्लाह की मेहर्बानी से मैं उस वक़्त वहाँ रहा और तुमको बचा पाया।... लेकिन तुम कौन हो? कहाँ से आते हो?"

सिंदबाद ने बूढ़े के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और अपनी सारी कहानी सुनायी। यह भी बताया कि अनेक वर्ष बाद समुद्री यात्रा करने वाला वह एक व्यापारी है। इस पर वृद्ध ने कहा–"तब तो तुम अपना माल शीघ्र बेच दो। वह उत्तम जाति का माल है। यहाँ पर उसकी बड़ी माँग है।"

सिंदबाद बूढ़े की बातें सुनकर दंग रह गया। उसकी समझ में न आया कि बूढ़ा किस माल के बारे में पूछता है। वह खाली हाथ आया है। उसके पास व्यापार करने के लिए माल ही कहाँ है?

फिर भी सिंदबाद ने यह बात प्रकट न की। उसने कहा–"अच्छी बात है। देखा जायगा।"

"देरी किसलिये? चलो, बाजार में। कहीं अच्छा दाम मिल जाय। दरियाफ़्त करेंगें। न मिला तो कोई नुक़सान भी तो नहीं है। माल मेरे गोदाम में ही पड़ा रहेगा।" बूढ़े ने समझाया।

"आपकी जो इच्छा! आप जो कहेंगे, वही करूँगा। मैं आपका मेहमान हूँ। मुझ से पूछने की भी जरूरत नहीं है। जैसा उचित समझे, कीजिये।" सिंदबाद ने जवाब दिया।

दोनों साथ-साथ हाट में गये। वहाँ पर अपनी डोंगी को देख सिंदबाद दंग रह गया। उस डोंगी की दलाल और व्यापारी जांच कर रहे थे। "वाह अल्लाह! कैसा अद्‌भुत चंदन है। मैंने ऐसा माल कभी देखा तक नहीं।" कोई कह रहा था।

सिंदबाद को तब मालूम हुआ कि उस ने जिस पेड़ की डालों से डोंगी बनायी,

वे उत्तम जाति के चन्दन की लकड़ियाँ थीं। वह प्रकट रूप में गंभीर रहा।

डोंगी का नीलाम होने लगा। बोली एक हज़ार दीनारों से शुरू होकर दस हज़ार तक चढ़ती गयी। नीलाम करने वाले ने सिंदबाद की ओर मुड़कर पूछा–"क्या दस हज़ार दीनारों में बेच दूं?" पर सिंदबाद ने मना किया।

तब बूढ़े ने सिंदबाद से कहा–"देखो, सिंदबाद! इससे ज्यादा दाम तुम्हें मिल नहीं सकता। चाहो तो मैं एक सौ दीनार और ज्यादा देकर खरीद सकता हूँ।"

"आप ही लेना चाहें तो मैं कैसे इनकार कर सकता हूं, साहब?" सिंदबाद ने कहा।

डोंगी को बूढ़े के नौकरों ने गोदाम में पहुँचा दिया। बूढ़े ने दस हज़ार एक सौ दीनार एक पेटी में रखकर सिंदबाद को दिया। खाना खाते समय बातों के सिलसिले में बूढ़े ने सिंदबाद से कहा।

"बेटा, मेरे पुत्र नहीं हैं। मगर काफ़ी संपत्ति है। मैं कई बड़े-बड़े पदों पर भी काम कर रहा हूँ। मेरी सारी जायदाद की वारिस मेरी इकलौती बेटी है। तुम क्या मेरी बेटी के साथ शादी करके मेरी जायदाद और पदों के वारिस बन सकते हो?"

"मैं आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता।" सिंदबाद ने गद्गद् कंठ से उत्तर दिया।

तुरंत वृद्ध ने क़ाजी तथा गवाहियों को बुलवाया। उन सब के सामने सिंदबाद के साथ अपनी बेटी की शादी की। वह युवती बड़ी सुंदर थी। उसके शरीर पर हज़ारों दीनारों के क़ीमती आभूषण और वस्त्र थे। उसके साथ प्रेमपूर्वक गृहस्थी चलाते सिंदबाद बहुत समय तक वहीं रह गया।

कुछ साल बाद सिंदबाद का वृद्ध ससुर मर गया। सिंदबाद ने बड़ी शान से उसकी अंत्येष्टि करायी। वह अपने ससुर की ज़ायदाद का वारिस था। इसलिए उस प्रदेश का वह प्रधान बना और वहाँ के आचार-व्यवहारों का बड़ी सजगता के साथ पालन करने लगा।

उस नगर में हर साल एक विचित्र बात हुआ करती थी। हर साल वसंत ऋतु में एक दिन वहाँ के पुरुषों के पंख लग जाते हैं। वह सारा दिन वे लोग आसमान में विचरते हैं। ये पंख औरतों और बच्चों के नहीं लगते। वे लोग शहर में ही रह जाते हैं।

विचित्र बात तो यह थी कि सब पुरुषों के पंख लग गये, पर सिंदबाद के न लगे। इसलिए सब पुरुषों के आसमान में विचरने के लिए जाने पर वह औरतों और बच्चों के साथ नगर में ही रह गया था। उसने अनेक लोगों से पूछा कि उसके पंख क्यों न लगे, मगर किसी ने उसे इसका कारण नहीं बताया।

इसलिए सिंदबाद ने गुप्तरूप से अपने एक कर्जदार व्यापारी से यह समझौता कर लिया कि वह भी उसकी कमर को

पकड़कर उसके साथ आसमान में उड़ेगा। सिंदबाद उस व्यापारी के साथ जब बहुत ऊपर उड़ा, तब उसे लगा कि स्वर्ग उसके बहुत ही निकट है और गंधर्वों के गीत उसे सुनाई दे रहे हैं।

"अल्लाह! तुम्हारी यह कैसी महिमा!" सिंदबाद ने आनंद में आकर कहा।

दूसरे ही क्षण सिंदबाद व्यापारी के साथ पत्थर की भांति नीचे उतर आने लगा। मगर खुश क़िस्मती से वे दोनों एक पहाड़ी चोटी पर सुरक्षित उतर पड़े। व्यापारी सिंदबाद की ओर क्रोधभरी दृष्टि से देख पुनः आसमान में उड़ चला।

सिंदबाद अपनी हालत पर दुखी हो रहा था कि उसी समय दो युवक सिंदबाद की ओर आ पहुँचे। उनके हाथों में सोने की छड़ियाँ थीं। सिंदबाद ने उन से एक-दो सवाल पूछे। मगर उन लोगों ने कोई जवाब न दिया। उनमें से एक ने सिंदबाद के हाथ एक छड़ी देकर अमुक दिशा की ओर जाने का संकेत किया। सिंदबाद उस दिशा में गया तो देखता क्या है, एक जगह एक साँप आदमी को निगल रहा है। उसने साँप को छड़ी से मारा। साँप मर गया। उसके मुँह से सिंदबाद ने एक आदमी को बाहर निकाला, वह कोई और न था, बल्कि सिंदबाद को ऊपर उड़ा ले जानेवाला ही था–"साहब, तुमने मेरी जान बचायी। मैंने तुम्हारे साथ जैसा व्यवहार किया, उसके लिए क्षमा कर देना। तुमने एक नाम का उच्चारण किया जिससे मेरी उड़ने की शक्ति जाती रही। हम लोग उस नाम का उच्चारण नहीं करते।" उस आदमी ने कहा।

"मैं अब वह नाम न लूँगा। तुम मुझे अपने घर पहुँचा दो।" सिंदबाद ने पूछा।

उस नगर के वासी पिशाचगणों की संतान है। यह बात सिंदबाद की पत्नी ने भी उसे बतायी। अपनी पत्नी की इच्छा पर सिंदबाद ने अपनी सारी जायदाद बेच डाली। उस धन से एक जहाज और माल खरीदकर पत्नी के साथ वह बगदाद लौट आया।

सिंदबाद को देख उसके दोस्त, परिवार के लोग व रिश्तेदार बहुत प्रसन्न हुए। उसने उनके सामने यह शपथ खायी कि वह आइंदा समुद्री यात्रा न करेगा और जिंदगी भर अपनी बात पर ही रहा।

(समाप्त)

झगड़ालू औरत

एक लकड़हारा था। उसकी औरत डायन जैसी थी। वह अपने पति को कुत्ते के बराबर मानती थी। लकड़हारे की कमाई बहुत थोड़ी सी थी, उसकी औरत सारी कमाई हड़प लेती। वह अपने पति को ठीक से खाना भी नहीं खिलाती। अगर वह कभी यह कहता कि 'तरकारी में नमक ज़्यादा पड़ गया है' तो दूसरे जून तरकारी में वह नमक तक न डालती।

झगड़ालू पत्नी के साथ लकड़हारे ने जैसे-तैसे कुछ दिन गुज़ारे, आख़िर उससे सहा नहीं गया। उसने आत्महत्या करने को ठानी। मगर फाँसी लगाने को उसके घर में रस्सा तक न था। खरीदना चाहे तो पास में पैसे न थे। इसलिए वह अपनी कमाई में से पैसा-पैसा करके बचाता गया। मगर दुर्भाग्य से एक दिन उसकी पत्नी ने उसकी चोरी पकड़ ही ली।

"तुम्हारे पास ये सब पैसे कहाँ से आ गये? इन्हें तुम छिपाते क्यों हो? क्या अपने दोस्तों के साथ दारू पीकर मौज उड़ाना चाहते हो?" पत्नी ने पूछा।

"अरी, ऐसी कोई बात नहीं, रस्सा ख़रीद कर फाँसी लगाना चाहता हूँ।" लकड़हारे ने सच्ची बात बता दी।

यह बात सुनते ही झगड़ालू पत्नी ने लकड़हारे को पीटा, और गालियाँ भी दीं।

लकड़हारे ने सोचा कि अब पत्नी के साथ दिन काटना ना मुमक़िन है। यह सोचकर दूसरे दिन सवेरे जंगल से होते हुये पहाड़ की ओर चल पड़ा।

अपने पति को सवेरे उठकर कहीं जाते हुये झगड़ालू पत्नी ने देखा। उसने मन में सोचा कि उसकी चाल का पता

विजया चौहान
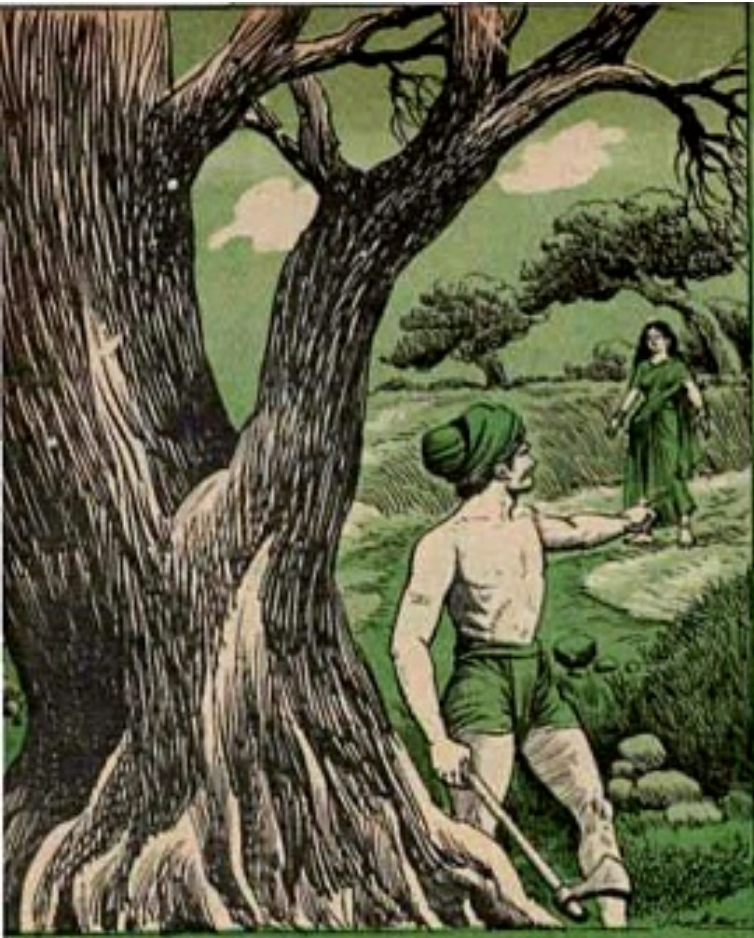
लगाना चाहिये। यह सोचकर वह अपने पति के पीछे चल पड़ी।

लकड़हारे ने समझ लिया कि उसकी औरत उसका पीछा कर रही है। उसने मन में सोचा–"भगवान! क्या मुझे इस झगड़ालू औरत से मुक्ति नहीं मिलेगी ?"

लकड़हारा एक जगह रुक गया। कुल्हाड़ी निकाल कर लकड़ी काटने लगा ताकि उसकी औरत यह समझें कि वह लकड़ी काटने को ही निकल पड़ा है।

लकड़हारे की औरत इस तरह झाड़ियों में भटक रही थी, मानों वह किसी चीज़ को ढूंढ रही हो। अचानक लकड़हारे ने देखा कि उसकी औरत एक उजड़े कुएँ की ओर क़दम बढ़ाये जा रही है। उस कुएँ के चारों ओर दूब और झाड़ियाँ उगी थीं जिससे अपरिचित लोगों को कुएँ का पता नहीं लगता था।

लकड़हारे की औरत अगर भूल से उस कुएँ में गिर जावेगी तो उसे विशेष रूप से चिंता करने की कोई जरूरत भी नहीं है। पर वह स्वभाव से दयालू था, इसलिए चिल्ला उठा–"अरी, वहाँ पर उजड़ा कुआँ है। खबरदार! बच रहो।"

"मुझे डरा कर घर भेजकर वह अपना उल्लू सीधा करने की सोचता है।" यह सोचकर झगड़ालू औरत दो क़दम आगे बढ़ी और कुएँ में गिर गयी।

"अपनी करनी का फल भोगो!" यह सोचते लकड़हारा कुल्हाड़ी उठा घर की ओर चल पड़ा। उस रात को उसने आराम की नींद सोयी।

लेकिन दूसरे दिन सवेरे जागते ही उसका दिल तड़पने लगा। चाहे वह जैसी भी झगड़ालू क्यों न हो, आखिर मेरी औरत है। उसे उजड़े कुएँ से बाहर निकालना मेरा कर्तव्य है। यह सोचकर वह कुएँ की ओर चल पड़ा।

उसने कुएँ में झांक कर देखा। मगर उसे कुछ दिखाई न दिया। "अरी, यह धोती पकड़ लो। मैं ऊपर खींच लेता हूँ।"

लकड़हारे के सवाल का कोई जवाब न मिला। मगर दो-तीन मिनट बाद कुएँ में उतारी गयी धोती भारी लगने लगी। लकड़हारा धोती को ऊपर खींचने लगा।

धोती ऊपर खींच कर वह देखता क्या है, उसकी औरत की जगह कोई पिशाचिनी है। उसे देख लकड़हारा बेहोश होते होते बच रहा। पिशाचिनी ने लकड़हारे से कहा—"डरो मत! आज तुमने कैसा पुण्य किया, तुम खुद नहीं जानते। मुझे भयंकर आफ़त से तुमने बचाया। मैं तुम्हारा ऋण चुकाने की कोशिश करूँगी।"

"मैं ने तुम्हारा क्या उपकार किया?" लकड़हारे ने घबराये हुये पूछा।

"और क्या करना होगा? मैं कई सालों से इस कुएँ में सुख और शांति के साथ रहती आयी हूँ। कल एक खतरनाक औरत से मेरा पाला पड़ा। उस पल से मुझे शांति नहीं है। तुमने ईश्वर की भांति मेरी रक्षा की। मैं तुम्हारा उपकार करूँगी। सुनो, इस देश के राजा की अप्सरा जैसी पुत्री है। मैं उस में आवेश हो जाऊँगी। राजा सब देशों के वैद्य और ज्योतिषियों को बुला भेजेंगे। वे दवा और मंत्र-तंत्र करेंगे, मगर कोई फ़ायदा न होगा। जब राजा एक दम परेशान होगा, तब तुम उसकी सेवा में पहुँचकर समझा दो कि उस पिशाचिनी को भगा दोगे। पिशाचिनी को भगाने में मैं तुम्हारी मदद करूँगी। तब राजा तुमको पुरस्कार देगा। समझे!" पिशाचिनी ने समझाया।
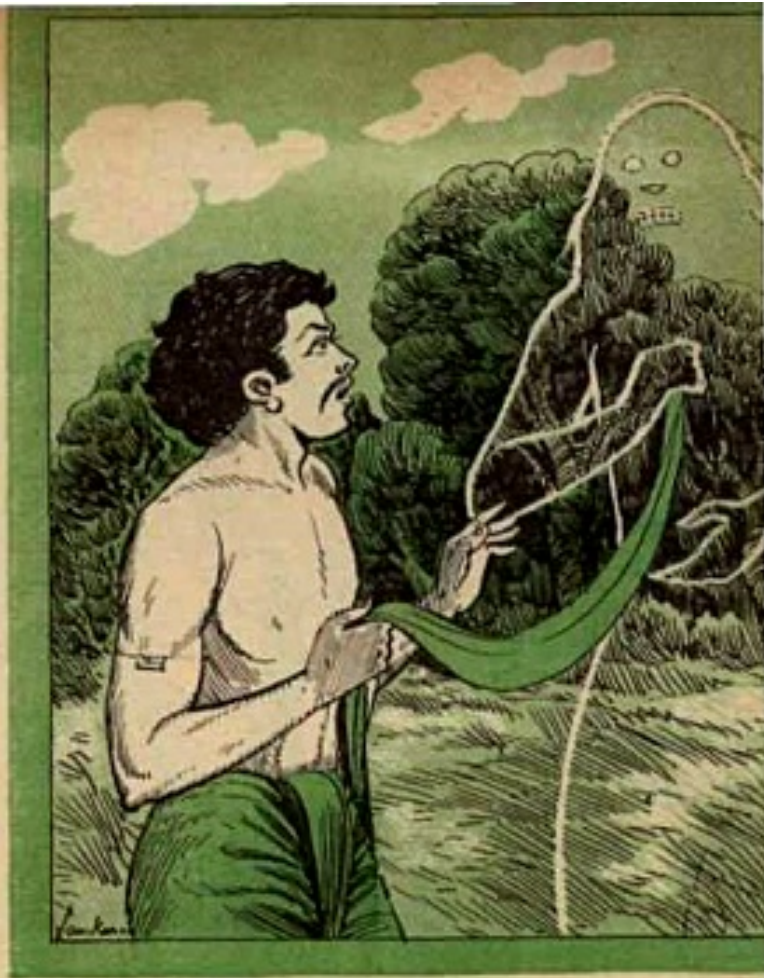
"मैं पिशाचिनी को कैसे भगा सकता हूँ?" लकड़हारे ने पूछा।

"तुम्हारे आते ही मैं राजकुमारी को छोड़ चली जाऊँगी। तुम सिर्फ़ मंत्र पढ़ने का नाटक रचो।" पिशाचिनी ने कहा।

लकड़हारा खुश होता हुआ घर की ओर चल पड़ा। पिशाचिनी राजमहल की तरफ़ चल पड़ी। लकड़हारे की औरत के बारे में किसी ने कुछ न सोचा।

कुछ क्षणों में राजमहल पहुँचकर पिशाचिनी ने राजकुमारी में प्रवेश किया। राजकुमारी चीखती-चिल्लाती, सर पीटती, नीचे गिर पड़ी। दासियों ने उसे बिस्तर पर लिटाया।

यह खबर मालूम होते ही राजा ने राजवैद्यों को बुला भेजा। वैद्यों ने इलाज़ भी किया। मगर कोई फ़ायदा न रहा। राजा ने मांत्रिकों को बुलाया। मांत्रिक भी राजकुमारी को स्वस्थ न बना सके।

राजा ने अब की बार ज्योतिषियों को खबर कर दी। उन लोगों ने पंचांग पलटकर राशि, अंश आदि देख पूजा व शांति करायी। इस पर भी राजकुमारी स्वस्थ न बन सकी। आखिर राजा ने निराश हो यह ढिंढोरा पिटवाया कि जो आदमी राजकुमारी का इलाज करके उसे स्वस्थ बनायेगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया जायगा और राजा के अनंतर उसे गद्दी भी दी जायगी।

लकड़हारा अब अपने घर शांति से रहने लगा था। उसकी गरीबी तो हमेशा साथ थी ही। लेकिन डायन पत्नी से मुक्ति मिलने से वह मन हीं मन प्रसन्न था। इस खुशी में वह पिशाचिनी, राजकुमारी, राजा का पुरस्कार इत्यादि बातें बिलकुल भूल चुका था।

ऐसी हालत में उसने ढिंढोरा सुना। तुरंत उसे पिशाचिनी की बातें याद हो आयीं। वह ढिंढोरा पीटनेवाले से बोला–

"मैं राजकुमारी का इलाज कर सकता हूँ। उसकी जान खतरे में पड़ने के पहले ही मुझे राजमहल में ले चलो।"

लकड़हारा राजमहल में पहुँचाया गया। राजा को लगा कि यह गरीब राजकुमारी का इलाज ही क्या कर सकेगा? फिर भी उसके दिल के किसी कोने में आशा की झलक हुई। राजा ने सोचा, 'न मालूम किस में कैसी ताक़त है।'

लकड़हारा राजकुमारी के कमरे में पहुँचा। पानी मँगवाकर हाथ धोया। मंत्र पढ़ने का अभिनय करते ओंठ हिलाने लगा। तब राजकुमारी के भाल व कपोलों पर हाथ फेरा।

दूसरे ही क्षण राजकुमारी उठ बैठी और चारों तरफ़ बैठे हुए लोगों को देख मुस्कुरा उठी। ऐसा लगती थी कि मानों राजकुमारी के शरीर में कोई बीमारी ही न हो। राजमहल के लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा।

राजा ने अपने वचन का पालन किया। उसने लकड़हारे को अच्छे कपड़े व अभूषण दिये। उनके पहनने के बाद उसका आदर करते राजा ने बड़ी दावत दी। राजकुमारी के साथ लकड़हारे का विवाह शान से संपन्न हुआ।

राजकुमारी के साथ गृहस्थी चलाने में लकड़हारे को स्वर्ग जैसा प्रतीत हुआ। वह अपनी पहली पत्नी की यातनाओं से ऊब चुका था।

राजकुमारी को छोड़ पिशाचिनी पड़ोसी देश की राजकुमारी में प्रवेश कर गयी। उसे शायद रनिवास का चस्का लगा था।

पड़ोसी राजा भी राजकुमारी के तरह-तरह के इलाज कराकर निराश हो गया था। इसी समय उसे यह खबर मालूम हुई कि पड़ोसी देश की राजकुमारी भी एक बार इसी तरह की बीमारी से परेशान हो गयी थी। किसी ने आकर

इलाज करके उसे बचाया है और राजा ने राजकुमारी का उसके साथ विवाह भी किया है।

तुरंत पड़ोसी राजा ने लकड़हारे के ससुर के पास एक दूत भेजा। दूत ने राजदरबार में प्रवेश करके संदेश दिया—"कृपया आप अपने दामाद को भेजिये। अगर वह मेरी पुत्री का इलाज कर सके तो मैं भी उसकी द्वितीय पत्नी के रूप में अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ करूँगा।"

अपने ससुर की आज्ञा पाकर लकड़हारा पड़ोसी देश की राजकुमारी के पास पहुँचा। पहले की तरह हाथ धोकर उसने राजकुमारी के भाल और कपोलों का सपर्श किया।

इस बार पिशाचिनी राजकुमारी को छोड़ भाग नहीं गयी। गुप्त रूप से लकड़हारे से बोली—"तुमने मेरा जो उपकार किया था, उसका बदला मैं ने चुका दिया। मैं इस राजकुमारी को छोड़कर नहीं जाऊँगी। अगर तुम हठ करोगे तो मैं फिर से तुम्हारी पत्नी में प्रवेश कर तुम्हें अच्छा सबक़ सिखाऊँगी।" पिशाचिनी ने धमकाया।

लकड़हारे ने कहा—"इस राजकुमारी से मेरा कोई वास्ता नहीं है। तुम चाहो तो मेरी पत्नी को भी ले लो। मैं अपनी पहली पत्नी से बचने के लिए यहाँ आया हूँ। वह डायन कुएँ से निकल मेरी खोज करते आ गयी है। यहाँ पर भी मेरा पीछा करते आ रही है।"

पिशाचिनी लकड़हारे की बातों की पूर्ति होने के पहले ही राजकुमारी को छोड़ भाग गयी। वह कहाँ चली गयी, उसका क्या हुआ, किसी को पता न चला।

लकड़हारा दूसरी राजकुमारी के साथ भी विवाह करके-दोनों पत्नियों के साथ सुखपूर्वक शेष दिन काटने लगा।

अण्डों का दाम

एक युवक नौकरी की खोज में अपने गाँव से निकल पड़ा। चलते-चलते शाम को एक गाँव में पहुँचा। एक भटियारिन के घर पहुँचकर उसने पूछा–"काकी, मुझे ज़ोर की भूख लगी है। बड़ी दूर से आया हूँ। खाने को कुछ दे दो।"

"बेटा, तुम ऐसे बेवक़्त आये हो, घर में खाना चुक गया है। हाँ, मेरे पास छे अण्डे हैं। अण्डे बनाकर खिलाऊँ।" भटियारिन ने पूछा।

युवक ने मान लिया। भटियानिन ने छे अण्ड़े बनाकर युवक को खिलाया। उसकी भूख मिट गयी।

"काकी, अण्डों का क्या दाम दूं?" युवक ने पूछा।

"क्या दोगे, बेटा! एक कौड़ी देते जाओ।" भटियारिन ने कहा।

"मेरे पास सोने का सिक्का है। क्या छुट्टे पैसे दे सकती हो?" युवक ने पूछा।

"अरे, बेटा, मैं गरीबिन हूँ। मेरे पास सोने के सिक्के के छुट्टे पैसे कहाँ से आयेंगे! ज़रा याद तो रख लो, लौटती बार देते जाओ।" भटियारिन ने कहा।

युवक आगे बढ़ गया। वह कई देशों में घूमता गया। समुद्र भी पार कर टापुओं में गया। व्यापार करके खूब धन कमाया। कई साल बाद अपने देश को लौटते भटियारिन काकी के घर पहुँचा। युवक ने तांबे की एक कौड़ी निकाल कर भटियारिन को देना चाहा।

भटियारिन बड़ी अक्लमंद औरत थी। उसने बात की बात में भांप लिया कि वह युवक अब बड़ा अमीर हो गया है। उसने कहा–"बेटा, अण्डों का हिसाब एक कौड़ी नहीं होता, समझे!"

निर्मला दाण्डेकर

युवक ने अचरज में आकर पूछा—"हिसाब कैसा, काकीजी?"

"तुमने उस दिन जो छे अण्डे खाये, वे वैसे ही रख दिये होते तो छे मुर्गी बनते, मुर्गियाँ फिर से अण्डे देतीं। वे अण्ड़े फिर से मुर्गियाँ बन जाते। वे सब मुर्गियाँ फिर से अण्ड़े देतीं। इस प्रकार हिसाब करेंगे तो तुम्हें मुझे पाँच-छे लाख अण्ड़े देने पड़ते हैं। करीब करीब एक हज़ार सोने के सिक्के दे दो, तो मेरा हिसाब बराबर हो जायगा।" भटियारिन ने समझाया।

"काकीजी, मेरे पास इतना धन नहीं है।" युवक ने कहा।

भटियारिन ने न्यायाधिकारी के पास जाकर शिकायत की कि इस युवक से मुझे एक हज़ार सिक्के मिलने हैं, लेकिन अब उन्हें देने से यह इनकार करता है।

न्यायाधिकारी ने सिपाहियों को भेज कर युवक को बुला भेजा। उसे क़ैद में रखवा कर दूसरे दिन फ़ैसला करने की बात बतायी।

दूसरे दिन जब युवक न्यायालय में आया, तब एक जवान ने उसके निकट जाकर कहा—"भाई साहब! मैंने अभी अभी न्यायशास्त्र का अध्ययन किया है। आप की ओर से वकालत करने को

कोई नहीं है। मुझे वह मौक़ा दिला दीजिये।"

युवक ने आश्चर्य में आकर जवाब दिया–"मुझे कोई एतराज़ नहीं है। आप मेरी ओर से वकालत कर सकते हैं।"

थोड़ी देर बाद न्याधिकारी ने मुद्दई तथा मुद्दालेह को बुलाया।

भटियारिन न्यायालय में हाज़िर थी। युवक को सिपाही आगे ले आये।

न्यायशास्त्र का विद्यार्थी न्यायाधिकारी के पास जाकर बोला–"न्यायाधीश! आप से मेरा निवेदन है कि आप थोड़ी देर तक यह मुक़द्दमा मुल्तवी करें। क्योंकि मैं इस युवक की ओर से वकालत करने जा रहा हूँ। मगर उसके साथ विस्तारपूर्वक चर्चा करने का मुझे समय नहीं मिला।"

"कल शाम को तुम क्या कर रहे थे?" न्यायाधिकारी ने क्रोध में आकर पूछा।

"आप मुझे क्षमा कर दीजियेगा। कल दिन भर मैं मूँगफली के बोने के लिए उन्हें तवे पर भूनते खेत पर ही रह गया था।" न्यायशास्त्र के विद्यार्थी ने कहा।

"यह कैसी बेवकूफ़ी की बात है? अरे बोनेवाले मूँगफली के बीजों को कोई भूनता भी है? भूने हुए बीजों से कहीं अंकुर भी फूटते हैं?" भटियारिन ने झट कह दिया।

न्यायशास्त्री ने भटियारिन की ओर आश्चर्य से देखकर पूछा–"कहीं पकाये गये अण्ड़ों से मुर्गियाँ निकल सकती हैं? अगर पकाये गये अण्ड़े पीढ़ियों तक मुर्गियाँ दे सकते हैं तो भूने गये बीजों से अंकुर क्यों नहीं फूट सकते?"

न्यायाधिकारी की समझ में सारी बात आ गयी। भटियारिन की फ़रियाद को बरखास्त कर दिया। युवक ने अपनी ओर से वकालत करनेवाले न्यायशास्त्री को अच्छा पुरस्कार दिया और अपने गाँव को चल पड़ा।

परिगत परमार्थान् पंडितान् मावमंस्थाः,
तृणमिव लघु लक्ष्मी नैंवतान् संरुणद्धि;
अभिनवमदरेखाश्यामगंडस्थलानां
न भवति बिसतंतु र्वारणं वारणानाम् ।। ।। १ ।।

[ज्ञानी पंडितों का अपमान न करो। तुम्हारी संपत्ति उनके सामने तृण के समान है। मत्त हाथियों को कमलनालों से बांधने का प्रयत्न करना कैसे संभव है?]

अंभोजिनी वनविहार विलास मेव
हंसस्य हंतु नितरां कुपितो विधाता,
नत्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां
वैदग्ध्यकीर्ति मपहर्तु मसौ समर्थः ।। ।। २ ।।

[ब्रह्मा अगर हंस पर नाराज हो जाते हैं तो उसे कमलपुष्पों से भरे सरोवर में विचरण न करने का आदेश दे सकते हैं, लेकिन दूध और पानी को अलग करने की उसकी शक्ति को खींच नहीं सकते]

जयंति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः
नास्ति तेषां यशःकाये जरामरणजं भयं ।। ।। ३ ।।

[उत्तम कृतियों की रचना करके रससिद्ध हो संपादन करनेवाले यशरूपी शरीर के लिए वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं हो सकतीं। अर्थात इनसे वह परे है।]

डाकू

एक दिन एक व्यापारी किसी शहर में व्यापार करने आया और अपना सारा माल बेच कर एक हज़ार रुपये बना लिये। उन रुपयों की गठरी को साथ ले उसने एक सराय में किराये पर कमरा लिया और उसमें सो गया।

व्यापारी ने सुबह उठ कर देखा तो रुपयों की गठरी नदारद थी। तुरंत उसने सराय के मालिक से यह बात कह दी।

सराय के मालिक ने उसमें ठहरे हुए सब यात्रियों को एक जगह बुलाया और सब के सामानों की जाँच करने का अपने नौकरों को आदेश दिया।

उसी समय बड़ी बड़ी मूँछोंवाला व्यक्ति एक गठरी लेकर वहाँ आ पहुँचा। उस गठरी को सराय के मालिक के चरणों पर रख कर बोला—"साहब, लीजिये, यह आपका धन है। ठीक से देख लीजिये कि इसमें रुपये बराबर हैं कि नहीं! मैंने ही गठरी की चोरी की है। मैं इस ख्याल से क़ैद होने आया हूँ कि मेरी वजह से ये बुजुर्ग सब अपमानित न हो, मैं यह सहन नहीं कर पाया।"

उसकी बातों भर व्यापारी बड़ा खुश हुआ। उसने गठरी खोल कर रुपये गिन कर देखा और बोला—"रुपये बराबर हैं। लगता है कि तुम साधारण चोर न हो। कोई भी चोर धन वापस नहीं लौटाता। लो यह इनाम!" यह कहते व्यापारी चोर को थोड़े रुपये देने लगा।

चोर ने उन रुपयों को लेने से इनकर करते हुए कहा—"चोर दण्ड पाने योग्य है, पुरस्कार के नहीं। मैंने यह चोरी कैसे की, बता दूँ तो आप लोग आइंदा सावधान होंगे। आप लोग जब अपना सारा माल बेच कर धन के साथ निकले, तब मैं आपके पीछे-पीछे चला आया। जब आप लोग कमरे ले रहे थे,

गोविन्द राय

तब मैंने जान लिया कि अमुक कमरा अमुक व्यापारी का है। मैं उस कमरे में प्रवेश करके चारपाई के नीचे छिप गया। जब आप लेट कर खुर्राटे लेने लगे तब मैं ऐसे-ऐसे रेंगते आया, बिना आहट के गठरी यों हाथ में ली और इसके पीछे वाले अंधेरे कमरे में भाग गया।" ये शब्द कहते चोर व्यापारी की गठरी ले पीछे के कमरे में दौड़ा। पल भर में स्नानागार के पीछे की दीवार लांघ कर जंगल में भाग गया।

व्यापारियों की समझ में न आया कि चोर का उद्देश्य क्या है, वे यही सोच कर इंतज़ार करते रहे कि चोर फिर लौट आयगा। लेकिन बड़ी देर तक लौटते न देख तब बात उनकी समझ में आ गयी। पर कहीं उसका पता न चला। असल में वह मामूली चोर नहीं, लुटेरा है, डाकू है। वह सबके देखते चोरी करता है।

उस डाकू का एक शिष्य था। वह अपने गुरु की मदद करता था। उस शिष्य ने एक बार एक अमीर का पीछा किया। उस अमीर के हाथ में पीले रंग की एक थैली थी। उस थैली में सोने के सिक्के थे। चोर ने देखा कि वह अमीर सोने के सिक्के गिन कर उस थैली में डाल रहा है। उसने अमीर का पीछा किया।

अमीर ने घर लौट कर नौकर को आदेश दिया कि थैली भीतर रख कर लोटे से पानी ला दे। नौकर ने मेज़ पर थैली रखी। मालिक को पानी ला दिया और नाश्ता लाने के लिए गया। मालिक आंगन में पैर धो रहा था। चोर ने चुपके से अन्दर घुस कर थैली ले ली। जल्द ही जंगल में पहुँच कर अपने गुरु को थैली सौंप दी और वह सारी कहानी बता दी कि उसने थैली की चोरी कैसे की।

"अरे, तुमने बड़ी गलती कर दी। मालिक नौकर पर संदेह करके उसे

सतायेगा। हमारे जरिये किसी को तक़लीफ़ नहीं होनी चाहिये।" डाकू ने अपने शिष्य को समझाया।

"भूल हो गयी, गुरुदेव। मैं ऐसा उपाय करूँगा जिससे नौकर को कोई तक़लीफ़ न होने पावे।" ये शब्द कह कर पीली थैली ले वह फिर अमीर के घर आया।

डाकू ने जैसी शंका की, उसी तरह अमीर अपने नौकर को सता रहा था। उसे खंभे से बांध कर धमका रहा था–"बताओ, तुमने थैली कहाँ छिपायी? थैली न दोगे तो तुम्हारी हड्डी-हड्डी तोड़ दूँगा।"

"मैं कुछ नहीं जानता, मालिक! मैं थैली मेज़ पर रख कर अन्दर चला गया।" नौकर रोते जवाब दे रहा था। इतने में डाकू के शिष्य ने पुकारा–"साहब!"

"कौन है?" अमीर ने पूछा।

डाकू के शिष्य ने पीली थैली अमीर के सामने रख दी और बोला–"साहब, मैं सुभान का नौकर हूँ। आप थोड़ी देर पहले उनसे बात करते थैली वहीं छोड़ आये हैं। सुभान साहब ने यह थैली आपको देने को कहा है। चलता हूँ।" ये बातें कह कर डाकू का शिष्य चला गया।

अमीर घर लौटते सुभान के यहाँ गया था। लेकिन उसे अच्छी तरह से याद है कि वह थैली घर ले आया है। अमीर ने नौकर को खंभे से मुक्त करते पूछा–"अरे बेवकूफ़! मैं थैली घर न लाया तो तुम कैसे कहते हो कि तुमने थैली मेज़ पर रखी है?"

"साहब, आपने कहा कि थैली आपने मेरे हाथ दी, इसलिए मैंने ऐसा कहा।" नौकर ने जवाब दिया।

अमीर ने थैली खोलकर देखा तो उसमें मिट्टी के बर्तन के टुकड़े थे। दरियाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि सुभान के यहाँ ऐसा कोई नौकर नहीं है।

मामूली सवाल

एक गाँव में एक अमीर था। उसके इकलौती बेटी थी। अमीर के यहाँ एक अनाथ बालक था। वह मवेशी चराया करता। पढ़ा-लिखा न था, पर तेज़ बुद्धिवाला था। बोल-चाल में होशियार था। उसका नाम दीननाथ था।

अमीर की बेटी जानकी दीननाथ से छोटी थी। उसके हम उम्र के लोग कोई न थे, इसलिए जानकी हमेशा उससे बात करती, उससे हिल-मिल भी गयी। अमीर दीननाथ को नौकर की तरह न देखता, बल्कि अपने परिवार का मानता था।

दीननाथ और जानकी ज्यों-ज्यों बढ़ते गये, त्यों-त्यों उनका परिचय प्यार में बदल गया। उन दोनों ने शादी करने का भी निश्चय किया।

अमीर को यह बात मालूम हो गयी। उसने यह सोच कर दीननाथ को पीटना चाहा कि उसने दया दिखायी तो वह सर चढ़ता जा रहा है। लेकिन जानकी ने अपने पिता को रोकते हुए कहा–"इसमें दीननाथ की गलती ही क्या है? इस दुनिया-भर में उससे बढ़ कर पसंद आने वाला मेरे लिए कोई नहीं है। मैं उसे छोड़ किसी दूसरे से शादी न करूँगी। चाहे तो आप मुझे ही मार डालिये।"

अमीर ने सोचा कि दीननाथ को अब घर में रहने देना नहीं चाहिये, इसलिए बोला–"अरे दीननाथ! मैंने तुमको सांप न समझ कर पाला, अब तुम मुझे ही काट खाने जाने जा रहे हो। मेरी बेटी बेवकूफ़ है। अगर तुम सचमुच मेरे दामाद बनना चाहते हो तो तुम्हें धन और यश भी प्राप्त करना होगा। तुमको मैं एक साल की मोहलत देता हूँ। धन और यश के बिना तुम फिर मेरी आँखों के सामने आओगे तो

सुरेन्द्र कुमार

मार डालूंगा। समझे? इसी क्षण यहाँ से चले जाओ।"

जानकी रो पड़ी। दीननाथ गाँव छोड़ कर चला गया। गाँव में रहने से वह धन और यश प्राप्त नहीं कर सकता था, इसलिए वह सीधे राजधानी जा पहुँचा।

दीननाथ जब राजधानी पहुँचा तब राज-दरबार में पंड़ितों की सभा चल रही थी। राजा हर साल तीन दिन तक पंड़ितों की सभाएँ करता, प्रतियोगिताएँ चलाता, उसमें प्रथम निकलनेवाले पंडित का सम्मान करता। उनमें कोई भी व्यक्ति भाग ले सकता था।

उस साल तीन दिनों से सभाएँ चल रही थीं। मगर आश्चर्य की बात थी, कोई भी पंडित किसी दूसरे को हरा न पाता था। कठिन से कठिन समस्या का भी कोई न कोई जवाब दे देता था।

शाम तक किसी एक पंडित को विजय पानी थी। राजा ने पंडितों को बहुत ही प्रोत्साहित किया, पर कोई फ़ायदा न था, बल्कि सभा एक दम फीकी हो चली थी।

राजा ने निराश होकर पूछा—"अब प्रेक्षकों में से भी कोई सवाल पूछ सकता है!"

पंडित ही जब असफल रहे तो मामूली प्रेक्षकों का क्या कहना था। इसलिए सब
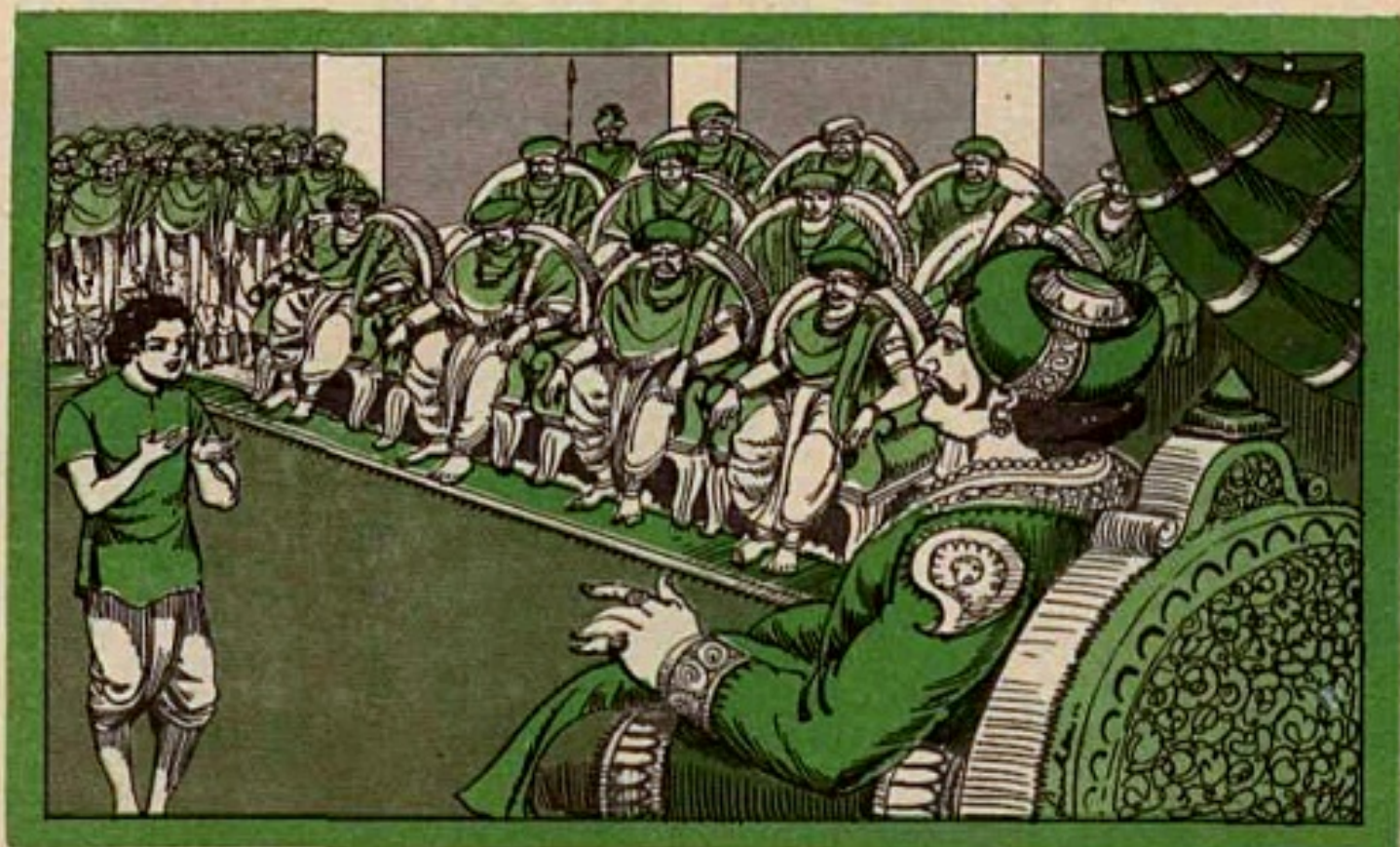
मौन रहें। पर दीननाथ चुप न रहा। उसने उठ कर राजा से निवेदन किया– "महाराज, मैं मामूली आदमी हूँ। इसलिए मामूली सवाल ही पूछ सकता हूँ।"

राजा ने दीननाथ को अनुमति दी।

"एक रास्ते के दोनों तरफ़ से दो आदमी चल रहे थे। वे एक दूसरे के क्या होते हैं? जब वे मिलते हैं, तब क्या होते हैं? और जब वे एक दूसरे को पार कर जाते हैं तब क्या होते हैं?" दीननाथ ने तीन सवाल सभा के सामने रखे।

ये सवाल सुनकर सभी पंडित चकित रह गये। कुछ लोगों ने यह कहकर आक्षेप किया कि ये सवाल बेमतलब के हैं। राजा को भी ठीक वैसा ही लगा। राजा ने समझ लिया कि इन सवालों का जवाब देने को पंडित तैयार नहीं है। इसलिए राजा ने दीननाथ से कहा–"केवल सवाल पूछने से काम नहीं बनता, उनके जवाब भी दे सको तो हम समझेंगे कि तुम जीत गये। वरना मैं तुमको सज़ा दूँगा।"

दीननाथ ने मुस्कुराकर कहा–"महाराज, मेरे सवाल बड़े ही सरल हैं। एक रास्ते के दोनों तरफ़ से चलनेवाले आमने-सामने हो जाते हैं, मिलने पर नज़दीक होते हैं, एक दूसरे के पार करने पर दूर होते हैं!"

सभा में बैठे हुए सब लोग ठठाकर हँस पड़े। राजा ने दीननाथ की बुद्धिकुशलता पर प्रसन्न होकर उस साल का पुरस्कार उसे देने की घोषणा की। उसका सम्मान किया। पुरस्कार दिया।

दीननाथ ने गाँव लौट कर सारी बातें अपने मालिक से बतायीं। जब से दीननाथ घर छोड़ चला गया था, तब से जानकी भी उसकी चिंता में सूख कर कांटा हो गयी थी। दीननाथ को धन और यश के साथ लौटे देख अमीर ने अपनी लड़की के साथ उसका विवाह किया।

राजा द्रुपद का आदेश पाकर पुरोहित पांडवों के निवास पर आया और बोला–"महाराजा ने आपका वृत्तांत जानने के लिए मुझे भेजा है। हमारे राजा तो राजा पांडु के मित्र हैं। उनकी इच्छा यही रही कि अपनी पुत्री द्रौपदी का विवाह अर्जुन के साथ संपन्न हो जाय। इसलिए आपसे निवेदन है कि आप अपने वंश, गोत्र आदि का परिचय देकर हमें प्रसन्न करे।"

युधिष्ठिर ने पुरोहित का यथोचित सत्कार किया। एक आसन पर बिठाकर कहा–"हमारे वंश और गोत्रों से तुम्हारे राजा का क्या मतलब है? तुम्हारे राजा ने यह घोषणा की थी कि जो व्यक्ति मत्स्य यंत्र को भेध डालेगा, उसके साथ अपनी कन्या का विवाह करेगा। मेरे भाई ने मत्स्य यंत्र को भेध कर राजकुमारी को जीत लिया है। मैं समझता हूँ कि इससे तुम्हारे राजा की इच्छा की पूर्ति हो गयी।"

इतने में पांडवों को ले जाने के लिए राजा द्रुपद के भेजे गये रथ आ पहुँचे। पांडव सब अलग-अलग रथों पर सवार हुए। कुंतीदेवी और द्रौपदी एक ही रथ पर सवार हुईं। रथ सब राजमहल में पहुँचे। राजा द्रुपद ने उनके पास तरह-तरह के उपहार भेजें। मगर पांडवों ने क्षत्रियोचित उपहार ग्रहण कर बाक़ी उपहार वापस कर दिये। द्रुपद ने उन लोगों को ध्यान से देखकर यह निश्चय किया कि ये लोग जरूर क्षत्रिय ही हैं।

१५. द्रौपदी का विवाह

एक मण्डप में सब का समावेश हुआ। राजा द्रुपद ने युधिष्ठिर की ओर मुड़कर कहा—"महाशय, हम नहीं जानते कि आप लोग कौन हैं? लेकिन आप लोगों का पूर्ण परिचय प्राप्त किये विना मैं अपनी पुत्री का शास्त्र-सम्मत विवाह नहीं कर सकता।"
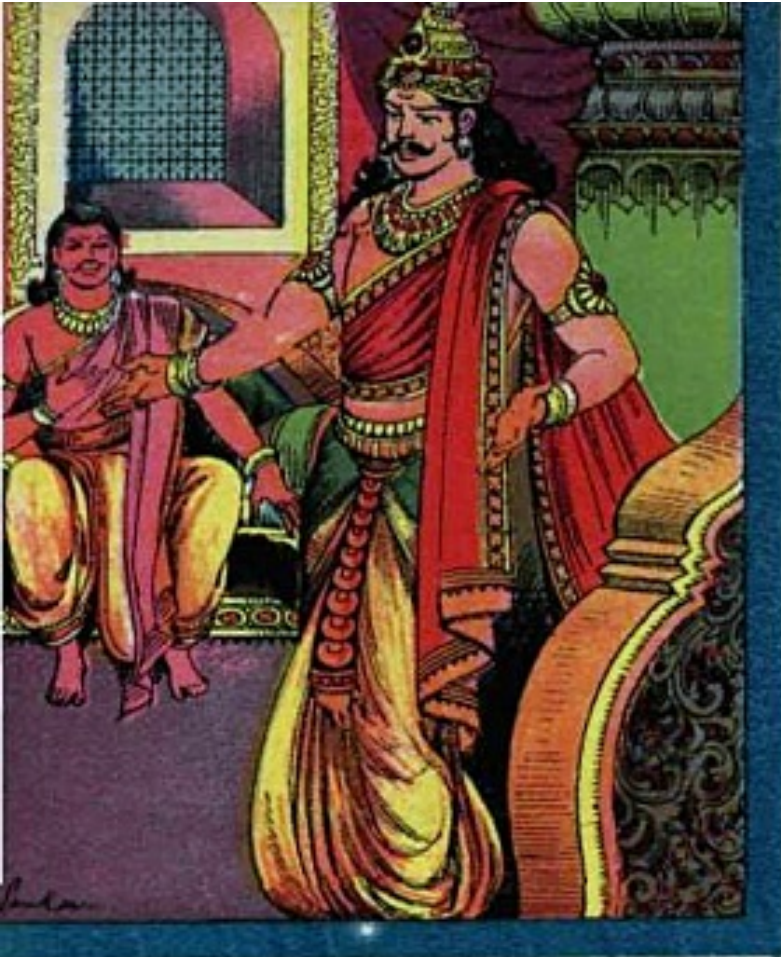
इस पर युधिष्ठिर ने सच्चा हाल सुनाया। यह समाचार जानते ही द्रुपद के नयनों से आनंद बाष्प गिर पड़े कि द्रौपदी को जीतनेवाला अर्जुन ही है। तब द्रुपद ने उन लोगों से कहा—"यह मेरा भाग्य ही कहना चाहिए कि आप लोग लाख के बने घर से जलने से बच रहें। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आप लोगों को आपका राज्य में वापस दिलाऊँगा।"

इसके बाद कुंतीदेवी, पांडव तथा द्रौपदी के रहने के लिए एक अच्छे महल का प्रबंध किया गया। उसमें उनके आराम के लिए सब प्रकार की सुविधाएँ कर दी गयीं।

कुछ दिन बीत गये। तब द्रुपद ने पांडवों से कहा—"मैं अब अर्जुन और द्रौपदी का विवाह संपन्न करना चाहता हूँ।"

"यह कैसे संभव होगा? अर्जुन के बड़े भाई मैं और भीम हम दोनों अविवाहित जो हैं?" युधिष्ठिर ने जवाब दिया।

"तब मैं अपनी पुत्री का विवाह आप ही के साथ करूँगा।" द्रुपद ने कहा।

"आपकी पुत्री रत्न जैसी है। रत्न का अनुभव सब कर सकते हैं। अपनी माँ की बात रखने के लिए हम पांचों द्रौपदी के साथ विवाह करेंगे।" युधिष्ठिर ने कहा।

इस पर द्रुपद ने आश्चर्य में आकर पूछा—"यह तो सहज है कि एक पुरुष अनेक कन्याओं के साथ विवाह कर सकता है, मगर एक कन्या का अनेक पुरुषों के साथ विवाह करना कहीं संभव है? इस संबन्ध में

कल में, आप, कुंतीदेवी तथा धृष्टद्युम्न सब मिलकर चर्चा करेंगे।" इसके बाद द्रुपद ने चर्चा समाप्त की।

उस वक़्त काले हिरण का चमड़ा धारण कर कृष्णद्वैपायन वहाँ पर आ पहुँचे। सब ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। उन्हें उचित आसन पर बिठाकर सब अपनी अपनी जगह बैठ गये।

द्रुपद ने कृष्णद्वैपायन से कहा—"महात्मन्, समस्त प्रकार के धर्म जाननेवाले युधिष्ठिर का कहना है कि वे पाँचों भाई मेरी पुत्री के साथ विवाह करना चाहते हैं। आप सब धर्मों के ज्ञाता हैं। क्या किसी भी युग में अनेक पुरुषों ने एक कन्या के साथ विवाह किया है? क्या यह धर्म के विरुद्ध नहीं है?"

इस पर युधिष्ठिर ने कहा—"मेरे मुंह से कभी अधर्म के शब्द नहीं निकलते। जब हम सब आपकी कन्या के साथ विवाह करना चाहते हैं, तब आपको कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। अलावा इसके मेरी माता का भी यही आदेश हुआ है। अपनी माता के आदेश का पालन करने से बढ़कर उत्तम धर्म कौन है? प्राचीन काल के आचारों की बात ले, तब भी हमारा निर्णय उचित प्रतीत होता है। प्राचीन
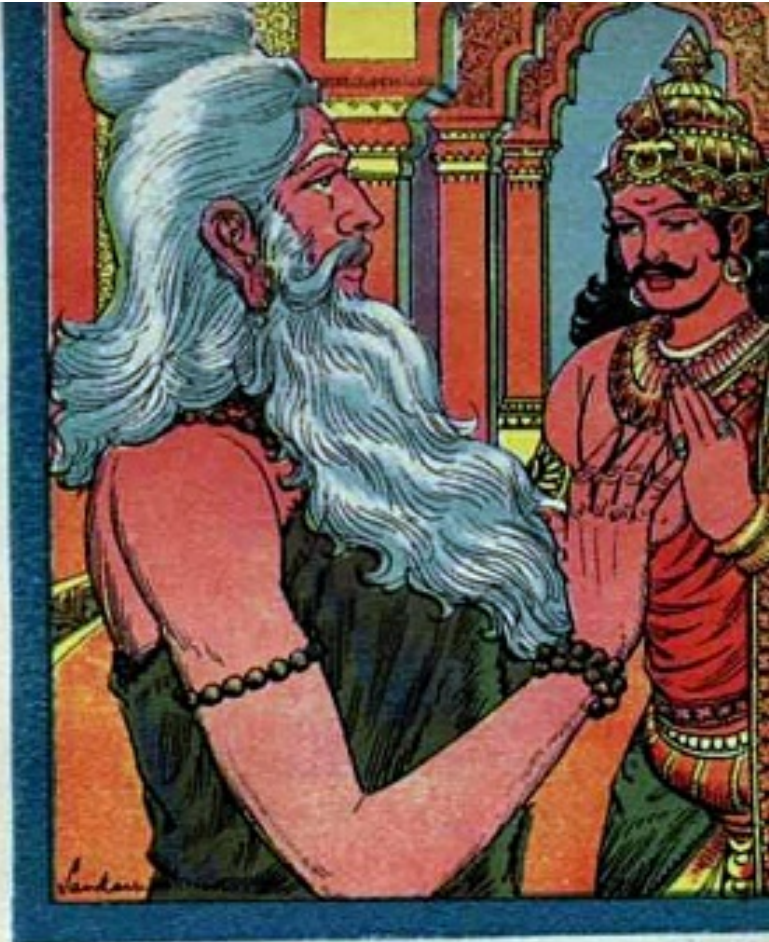
काल में गौतम वंश की जटिला नामक मुनि कन्या सात पुरुषों की पत्नी बनी। दाक्षायणी नामक मुनि कन्या प्रचेतस नामक दस मुनियों की पत्नी थी। ये बातें हमें पुराणों द्वारा मालूम होती हैं।"

इस पर धृष्टद्युम्न ने एक और आपत्ति उठायी—"छोटे भाई अर्जुन ने अपनी शक्ति के बल पर जिस कन्या को जीता उसके साथ बड़े भाई युधिष्ठिर कैसे विवाह कर सकते हैं? मेरी बहन कृष्णा इतने पुरुषों की पत्नी कैसे बन सकती है?"

कुंतीदेवी ने हठ किया कि उसके मुंह से निकली बात झूठी नहीं हो सकती।

नहीं हुआ। वह ज़िन्दगी भर पति की चिंता करते मर गयी और दूसरे जन्म में काशी राजा की पुत्री बनकर पैदा हुई। वह बड़ी सुंदर थी, फिर भी उसका विवाह न हुआ। इस पर दुखी हो उसने परमेश्वर के प्रति घोर तपस्या की। कुछ समय बाद परमेश्वर ने प्रत्यक्ष होकर उस कन्या से पूछा–"तुम क्या चाहती हो? किसलिए तपस्या करती हो?"

उस कन्या ने आतुरता में आकर "पति, पति, पति, पति. पति," इस प्रकार पाँच बार कहा।

"अगले जन्म में पाँच महापुरुष तुम्हारे पति होंगे।" परमेश्वर ने आशीर्वाद दिया।

इस पर काशी नरेश की पुत्री ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि अगर उसके पाँच पति होंगे तो उन सबकी समान रूप से सेवा करते हुये सबको समानपूर्वक सुख देने का वरदान अनुगृहीत करे।

वही कन्या इस जन्म में द्रौपदी के रूप में पैदा हुई और परमेश्वर के वरदान के अनुसार पाँचों पांडवों की पत्नी बनने जा रही है।

यह वृत्तांत सुनाकर मुनि कृष्णद्वैपायन ने द्रुपद को समझाया–"प्राचीनकाल में इस प्रकार के विवाह हुआ करते थे। इसका

तब कृष्णद्वैपायन ने कुंतीदेवी को हिम्मत बंधवा कर द्रुपद से कहा–" राजन्, युधिष्ठिर का कहना अधर्म नहीं है। कुंतीदेवी की इच्छा भी असंगत नहीं है। आप इन पांचों भाइयों के साथ अपनी पुत्री का विवाह कीजिये।"

इसके बाद राजा द्रुपद को एकांत में ले जाकर कृष्णद्वैपायन ने द्रौपदी के पूर्व जन्मों का वृत्तांत यों सुनाया।

प्राचीन काल में मौद्गल्य नामक मुनि के इन्द्रसेना नामक पत्नी थी। मौद्गल्य कोढ़ का शिकार हुआ। इसलिए इन्द्रसेना को पति के द्वारा कोई सुख प्राप्त

प्रमाण यह है। नितंत नामक राजर्षि के साल्वेय, शूरसेन, श्रुतसेन, सार, अतिसार नामक पाँच पुत्र थे। वे सब परस्पर बड़े प्रेम से रहते थे। उन पाँचों भाइयों ने मिलकर उशीनर की राजकुमारी अजिता के साथ विवाह किया और उसके द्वारा पाँच पुत्रों का जन्म दिया। यह रिवाज़ एक जमाने में अमल में था।

व्यास महर्षि कृष्णद्वैपायन के यह वृत्तांत बताने पर राजा द्रुपद का संदेह दूर हुआ। तब उसने पाँचों पांडवों को अपनी पुत्री के साथ विवाह करने की सम्मति दी।

उसी दिन अच्छा मुहूर्त था। लग्न बढ़िया था। चन्द्रमा के पूस नक्षत्र के साथ मिलन था। इसलिए कृष्ण द्वैपायन ने सलाह दी कि उसी दिन द्रौपदी का विवाह पांडवों के साथ संपन्न हो जाय, तो उत्तम होगा। राजा द्रुपद ने तुरंत विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दीं। सारे कौंपिल्य नगर में केले के पेड़ और सुपारी की मंजरियाँ सजायी गयीं। पीपल के कोंपलों के तोरण अलंकृत किये गये। नगर के सभी गृहों में चंदन का जल छिड़क कर कपूर और मोतियों की रंगोलियाँ सजायी गयीं। सारा नगर लोगों से खचाखच भरा हुआ था। सर्वत्र फूलों की मालाएँ सुशोभित थीं जिससे सारे नगर में सुगंध फैल रही थी। मंगल वचन सुनाई दे रहे थे। राजा द्रुपद के महल की ईशान दिशा में विवाह का पँडाल डाला गया था। पंडाल भी तोरणों से अलंकृत किया गया था। उसके स्तम्भों पर हरे रंग के वस्त्र लपेट दिये गये थे। रंग-बिरंगे वस्त्रों से वितान तना गया था। उसमें फूल और मोतियों की मालाएँ लटकायी गयी थीं। सुवर्ण चबूतरे पर अग्निकुंड का प्रबंध किया गया था। स्वर्ण पात्रों में पवित्र तीर्थों के जल रखे गये थे।
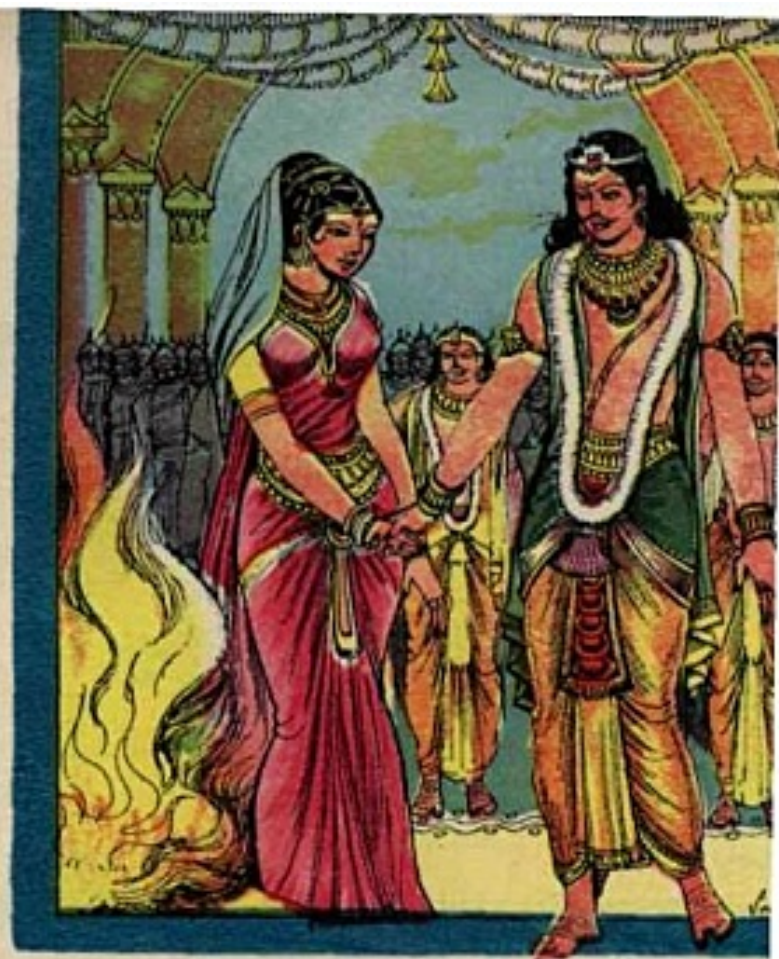
विवाह्-वेदिका के पास पाँचों पाँडव मंगल स्नान करके उत्तम वस्त्र धारण कर आ पहुँचे। सुंदर वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित हो द्रौपदी भी अपनी सखियों के साथ आ पहुँची। पुरोहित धौम्य ने पुण्याह्वाचन के बाद पह्ले द्रौपदी और युधिष्ठिर को विवाह्-वेदिका पर बिठाया। होम करके उन दोनों का शास्त्रानुसार विवाह् संपन्न किया। इसके बाद भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव के साथ द्रौपदी का विवाह् कराया।

राजा द्रुपद ने अपने दामादों को अलग अलग रूप में अमूल्य आभूषण, धन, रथ, घोड़े, हाथी, दास-दासी, दुधारू गायें इत्यादि भेंटें दीं। द्रुपद को ऐसा लगा कि जब पाँडव ही उसके जामाता हुये तो देवता भी उसकी कोई हानि नहीं कर सकते।

विवाह् के बाद द्रौपदी अंत:पुर में आयी। अंत:पुर की नारियों के बीच एक उत्तम आसन पर बैठी कुंतीदेवी के पास जाकर उसे साष्टांग प्रणाम किया और हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी। कुंतीदेवी अपनी बहू को देख बहुत प्रसन्न हुई। उसे उपदेश देकर आशीर्वाद भी दिये।

कृष्ण को जब मालूम हुआ कि पांडवों ने द्रौपदी के साथ विवाह् कर लिया, तब वे पाँचों पांडवों के लिए अमूल्य उपहार लेकर आ पहुँचे। इसके बाद कई दिन तक कृष्ण के साथ पांडव भी कौंपिल्य नगर में रह्ते समस्त प्रकार के सुख भोगने लगे।

कुछ ही दिनों में सभी राजाओं के साथ कौरवों को भी मालूम हो गया कि द्रौपदी के स्वयंवर के दिन मत्स्ययंत्र को भेध कर कर्ण के साथ युद्ध करनेवाला व्यक्ति अर्जुन है। शल्य को ह्रानेवाला व्यक्ति भीम है। तथा पांडव लाख से निर्मित गृह् में जलकर मरे बिना जीवित हैं।

यह समाचार हस्तिनापुर को लौटनेवाले दुर्योधन को भी मालूम हुआ। पांडवों के भाग्य पर दुर्योधन हताश हो गया। तब दुश्शासन अपने भाई दुर्योधन से बोला–"अगर अर्जुन ब्राह्मण का वेष नहीं धरता तो क्या द्रौपदी उसके हाथ लगती? यदि हमको पहले ही मालूम होता कि वह अर्जुन ही है तो क्या हम उसे प्राणों से छोड़ देते? इस वक़्त चिंता करने से फ़ायदा ही क्या है? बाहु-बल की अपेक्षा भगवान का बल उन्हें प्राप्त हो गया है।" इस प्रकार कौरव चिंता करते पुरोचन को दोष देते हस्तिनापुर पहुँचे।

यह सारा समाचार जानकर सब से अधिक विदुर प्रसन्न हुआ। उसने धृतराष्ट्र के पास जाकर द्रौपदी के स्वयंवर का समाचार सुनाया। धृतराष्ट्र ने गलत सुना कि द्रौपदी ने दुर्योधन को वर लिया है, इसलिए प्रसन्न होकर विदुर को आदेश दिया–"तुम द्रौपदी को शीघ्र रत्न, आभूषण, रेशमी वस्त्र इत्यादि भेज दो।"

विदुर ने समझ लिया कि धृतराष्ट्र ने उसकी बातों को गलत सुना है। तब उसने स्पष्टता के साथ समझाया–"द्रौपदी ने अर्जुन को वर लिया है। सुनते हैं कि पाँचों पांडवों ने द्रौपदी के साथ विवाह कर लिया है।"

सारी बातें सुनकर धृतराष्ट्र बोला–"तब तुम क्या कहते हो? अगर सच बताऊँ तो मुझे दुर्योधन आदि से पांडवों से ही ज्यादा प्रेम है। वे कैसे पराक्रमी हैं? बड़ों की कैसी सेवा करते हैं? अच्छे-बुरे का वे ख्याल रखते हैं। द्रुपद के साथ संबंध जोड़कर वे लोग अब और भी शक्तिशाली बन गये हैं। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि पांडव जीवित हैं और सुखी हैं।"

"राजन! आपकी बुद्धि सदा इसी प्रकार रहे!" विदुर ने कहा।
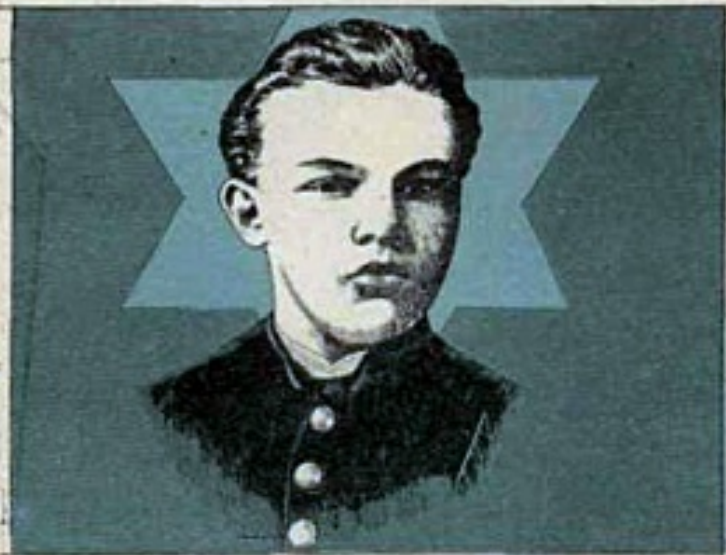
[२]

लेनिन ने मेहनत करने की ताक़त अपने में पैदा की। हमने पहले ही बताया कि लेनिन पाठशाला में ध्यान से पाठ सुनता है और बड़ा अक्लमंद विद्यार्थी है। वह स्वभावत: बुद्धिमान था, इसलिए विद्या में निपुण बनने के लिए उसे विशेष रूप से मेहनत करने की जरूरत न थी।

लेनिन अपने तथा अन्य के लोगों के संबंध में सूक्ष्मता के साथ विचार-विमर्श कर लेता था, इसलिए अपनी कमियों को खुद समझ लेता था। यह आदत भी उसने स्वयं डाल ली थी। विश्वविद्यालय में जब वह स्नातक बनने की दशा में पहुंच चुका था तब तक उसके स्वभाव में यह एक प्रमुख लक्षण के रूप में परिणत हो चुका था। बड़े होने पर उसमें इस गुण का अच्छा विकास हुआ।

व्लदीमिर जब छोटा लड़का था, तभी से वह अपने आसपास के प्रदेशों का परिशीलन किया करता था। मैं अकसर इसकी जाँच करती थी। वह बड़ी होशियारी और ख़ूबी के साथ दूसरों की कमज़ोरी को भांप लेता और उन्हें रुलाकर खुश होता था। साथ ही वह अन्य बातों को भी भुला न देता। दूसरों की अच्छाइयों को भी वह ग्रहण करता और यह देख लेता कि वह अच्छाई उसके भीतर है कि नहीं। ऐसी कोई अच्छी बात निकल आती तो उसे वह ख़ुद सीखने की कोशिश करता।

मैं समझती हूँ कि लेनिन का सब से अच्छा गुण यही है।

ए. उल्यानव

ए. उल्यानव (लेखिका)

बचपन में वह कभी न डींग मारता था और न अपनी तारीफ़ ही कर लेता था। बड़े होने पर भी उसे ये दुर्गुण पसंद न थे। १९२० में "काम समाल" के तीसरे अधिवेशन में भाषण देते हुए उसने कहा था कि युवकों को ऐसे दुर्गुणों से दूर रखना चाहिए।

व्लदीमिर खेलों में बड़ी रुचि रखता था। मित्रों तथा अपने भाई-बहनों के साथ खेलों में वह सदा आगे रहता था। उसकी हँसी, हास्य-कथाओं तथा ज्ञानवर्द्धक बातों से सदा घर गूंजता रहता।

वेर वल्येव्न कष्कदमोव नामक नारी हमारे परिवार की अत्यंत स्नेहपात्र मित्र थी। वह नगर की पब्लिक पाठशाला में अध्यापिका थी। उसने अपने अनुभव लिखते हुए भोजन तथा चाय-पानी के समय हमारे घर में कैसा उल्लास छाया रहता था, विशद वर्णन किया है– "व्लदीमिर तथा उसकी दूसरी बहन ओल्या सबसे अधिक शोर मचाते थे। उत्साह वर्द्धक उनके कंठ और हँसी-मजाक़ कभी बंद न होते थे।"

वे दोनों पाठशाला में कैसे शोर मचाते थे और क्या-क्या होता था, सारी बातें घर में बता देते थे। पिताजी भी हमारे साथ प्रसन्नतापूर्वक बातचीत करते थे। वे अपने कमरे से उठ आते और हमारे बीच बैठकर पाठशाला के जीवन से संबंधित मजेदार बातें सुनाते, कभी अपनी विद्यार्थी दशा के समाचार तथा अपने मित्रों की बातें भी सुना देते। कष्कदयोव ने यह भी लिखा है–"सब उल्लास में आकर हँस पड़ते। ऐसे स्नेहियों के बीच नयेपन का अनुभव न होता।" व्लदीमिर संगीत का बड़ा प्रेमी था। संगीत के प्रारंभिक पाठ माता ने उसे सिखाये। इसके बाद बालगीत

और सरलगीत भी सिखाये। उन गीतों को संगीत के स्वरों में बांधने की कला जल्द ही उसने सीखी। उन दिनों लगता था कि व्लदीमिर एक श्रेष्ठ संगीतज्ञ बनेगा। इसलिए जब उसने संगीत का अभ्यास छोड़ दिया, तब माँ को बड़ा दुख हुआ।

वसंतऋतु में पिंजड़ों से पक्षियों को मुक्त करने का उन दिनों एक रिवाज़ था। यह रिवाज़ व्लदीमिर को बड़ा पसंद था। माँ से पैसे माँगकर एक पक्षी खरीदा और उसे पिंजड़े से मुक्त कर दिया।

बचपन में व्लदीमिर को पक्षियों को पकड़ने का शौक़ भी था। वह अपने दोस्तों के साथ मिलकर पक्षियों के वास्ते जाल बिछा देता था। एक बार मैंने उसके पिंजड़े में "लिनेट" (एक क़िस्म का पक्षी) देखा। मुझे याद नहीं कि उस पक्षी को उसने खरीदा, जाल में फँसाया या किसी मित्र ने उसे दिया। लेकिन अच्छी तरह से मुझे याद है कि वह पक्षी ज्यादा दिन ज़िंदा न रहा। वह चिंता में घुलकर परों को तोड़-फोड़कर मर गया। इस पर व्लदीमिर गंभीर हो उठा। उसने पक्षी को

लेनिन का परिवार (बचपन में)

देखते दृढ़ स्वर में कहा–"आइंदा मैं कभी पक्षियों को पिंजड़े में बंद न करूँगा।"

इस बात पर वह हमेशा दृढ़ रहा।

बचपन में व्लदीमिर मछलियों तथा पक्षियों को पकड़ने के लिए शौक़ से घूमा करता था। मगर उसमें कभी यह व्यसन न था। जवान होने पर उसने यह आदत बिलकुल छोड़ दी।

पाठशाला में वह लैटिन, इतिहास, भूगोल तथा साहित्य के प्रति अधिक अभिरुचि रखता था। लेख लिखने का उसे बड़ा शौक़ था और बड़ा अच्छा लिखता भी था।

लेख लिखते समय वह केवल पाठ्य-पुस्तकों तथा अध्यापकों के बताये गये विषयों से तृप्त न होकर पुस्तकालयों की पुस्तकों से भी लाभ उठाता था। उसके लेखों में विषय अधिक होते थे। शैली साहित्यिक होती थी। बड़े वर्गों में साहित्य पढ़ानेवाले अध्यापक व्लदीमिर को बहुत चाहते थे। उससे प्रभावित भी थे और उसे प्रथम श्रेणी के अंक देते थे।

व्लदीमिर का विराम का समय तथा छुट्टियों का समय भी दौड़ने, चलने, तथा जाड़े के दिनों में स्केटिंग में और गरमी के दिनों में "क्रोके" खेलों तथा तैरने में बीत जाया करता था। वीरों की गाथाएँ पढ़ने का उसे शौक़ था। गोगौल तथा तुर्गिन्येव की रचनाओं को वह विशेष रूप से पढ़ता था।

व्लदीमिर अपने सहपाठियों से मित्रतापूर्ण व्यवहार करता और उनकी मदद भी किया करता था। उनके निबंध सुधारा करता। कभी कभी अपने साथी लेख लिखने में असमर्थ रह जाते तो उनकी रचना में भी मदद करता था। उसने एक बार मुझ से कहा भी था कि अपने सहपाठियों को अच्छे अंक प्राप्त होने में उनकी मदद करता था, फिर भी इस बात को वह गुप्त रखना चाहता था कि उससे तथा उसके मित्रों से सहपाठियों को लेखन में जो मदद मिलती है, वह दूसरों के कानों में न पड़े।

पाठशाला के विरामकाल में वह अपने साथियों के संदेहों को दूर करता था। साषा की भांति वह भी कभी कभी आधा घंटा पहले पाठशाला जाता और ग्रीक, लैटिन इत्यादि के लेखों के अनुवाद करने तथा गणित की कठिन समस्याओं को हल करने में वह अपने साथियों की मदद करता था। (समाप्त)

बालक लेनिन और उसकी बहन ओल्या

संसार के आश्चर्य: १०२. ट्रिनिड़ाड़ का हिन्दू मंदिर

यह मंदिर लास लोमास नगर में है। यहाँ पर मंदार पुष्पों को पूजा के काम में लाते हैं। पुजारी-डून पंडित-शंख बजाकर पीतल का घंटा बजाते पूजा करता है। ट्रिनिड़ाड़ के हिन्दुओं की उसने जो सेवा की, उसके निमित्त ब्रिटीशवालों ने उसे एक पदक प्रदान किया जिसे वह धारण करता है।

Photo by R. Udaya Bhaskar

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

"कला का यह अद्भुत खेल"

प्रेषक :
विनोदकुमार - जलंधर

Photo by Prabhakar Mahadik

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

"मेकअप का यह कैसा मेल"

प्रेषक :
विनोदकुमार - जलंधर

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता

अगस्त १९७०

पारितोषिक २०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख़ १० जून १९७० के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

जून – प्रतियोगिता – फल

जून के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गयी हैं। इनके प्रेषक को २० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **"कला का यह अद्‌भुत खेल"**
दूसरा फ़ोटो : **"मेकअप का यह कैसा मेल"**

प्रेषक : **विनोदकुमार,**
४९, आदर्श नगर, जलंधर शहर

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'